''ब्रह्मा बाप की विशेष शिक्षा - बापदादा दोनों के स्मृति स्वरूप बनो, फालो फादर करो''

आज के दिन सभी के मन में विशेष ब्रह्मा बाप की याद समाई हुई है। आज के दिन विशेष यादगार है ब्रह्मा बाप के साकार से अव्यक्त रूप में पार्ट बजाने का, तो अमृतवेले से लेके बापदादा ने देखा हर बच्चे के मन में विशेष ब्रह्मा बाप आंखों में समाये हुए थे। आज के दिन ही यादगार में ब्रह्मा बाप अव्यक्त रूप में पार्ट बजाने के निमित्त बनें। साकार रूप में बाप के साथ मिलन मनाने वाले बच्चे थोड़े थे, उन्हों के मस्तक में ब्रह्मा बाप के चरित्र और बोल, वरदान स्मृति में हैं। भल वह थोड़े थे अभी वृद्धि ज्यादा है लेकिन अभी भी अव्यक्त रूप में पालना दे रहे हैं। ब्रह्मा बाप को याद करते साकार रूप में पार्ट बजाने की प्रेरणा लेने वाले, साथी बनने वाले थोड़े थे लेकिन अब आप सब साथी बने हो। भले साकार रूप में नहीं देखा लेकिन अब अव्यक्त रूप में पालना ले रहे हैं। तो ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त रूप में पालना लेने वाले हाथ उठाना। नहीं, साकार में नहीं थे, अव्यक्त में आये हैं वह हाथ उठाओ। अव्यक्त ब्रह्मा अब भी कितनी पालना दे रहे हैं, अव्यक्त रूप में। शिव बाप तो साथ में हैं लेकिन ब्रह्मा बाबा भी अभी आकार रूप में पालना दे रहे हैं क्योंकि ब्रह्मा बाप का साकार तन में होने कारण स्थापना में बहुत अच्छे से अच्छा पार्ट बजाया, ब्रह्मा बाप के साथ ब्राह्मण भी थे, जो ब्रह्मा के समय साकार में थे, वह हाथ उठाना। थोड़े थे। अभी आये हुओं में थोड़े हैं और भी हैं जो टर्न बाई टर्न आते हैं।

तो आज ब्रह्मा बाप के दिन अमृतवेले से सभी के दिल में शिवबाबा के साथ ब्रह्मा बाप याद रहा है। साकार में ब्रह्मा बाप की पालना लेने वाले हाथ उठाना। लम्बा उठाओ लम्बा। थोड़े हैं, थोड़े हैं। चलो आगे अभी अव्यक्त ब्रह्मा की पालना ले रहे हैं इसीलिए अपने को कहलाते हो ब्राह्मण। साकार ब्रह्मा के साथ पार्ट बजाना यह भी भाग्य की निशानी है लेकिन अब भी सभी बच्चों की बापदादा दोनों मिलके सेवा कर रहे हैं। कितने भाग्यवान हैं! बापदादा बच्चों का भाग्य देख वाह बच्चे वाह! का गीत गाते हैं। लेकिन अब भी दोनों ही मिलके बापदादा दोनों ही बच्चों की सेवा कर रहे हैं। तो ब्रह्मा बाप की पालना का विशेष पार्ट है, फालो बापदादा दोनों को करो क्योंकि सभी दिल से याद करते हैं ब्रह्मा बाप को और साथ-साथ आज के विशेष दिन पर सभी के मन में अमृतवेले से लेके बापदादा दोनों की शिक्षायें बार-बार स्मृति में आती रही हैं। ब्रह्मा बाप की विशेष शिक्षा है - स्मृति स्वरूप बापदादा के बनो। अकेले बाप भी नहीं, अकेले ब्रह्मा बाप भी नहीं। दोनों को याद करो। दोनों की पालना आगे से आगे बढ़ा रही है। तो आज विशेष दिन के हिसाब से विशेष ब्रह्मा बाप की याद सबके दिल में है और फालो फादर कर रहे हैं क्योंकि साकार में आपके समान ब्रह्मा बाप भी रहा। तो ब्रह्मा बाप सदैव कहता है बापदादा दोनों को फालो करो। जैसे ब्रह्मा बाबा साकार में रहते, साकार में पार्ट बजाते बच्चों से भी और बाहर की सेवा में भी, ऐसे आप भी फालो ब्रह्मा बाबा करो। और बापदादा ने देखा बच्चे दोनों को फालो कर चल रहे हैं। बापदादा दिल में रोज़ अमृतवेले उन सिकीलधे बच्चों को, जो फालो करने वाले हैं उन्हों को विशेष यादप्यार देते हैं। वाह बच्चे वाह! का वरदान देते हैं।

तो आज के दिन जैसे ब्रह्मा बाप की विशेषता देखी है या सुनी है, ऐसे ही फालो कर रहे हैं ना! ब्रह्मा बाप की आप जैसे साकार में होते सर्व सम्बन्धों में आते प्रैक्टिकल लाइफ सुनी या देखी, तो ब्रह्मा बाप ने आज विशेष बापदादा दोनों को फालो करने वाले बच्चों को सामने लाके विशेष यादप्यार दी है। तो ब्रह्मा बाप की याद स्वीकार की! बहुत-बहुत दिल से प्यार दिया है। प्यार माना फालो फादर का वरदान मिलना। तो सब बापदादा को फालो कर रहे हैं ना। कर रहे हैं हाथ उठाओ। भले देखा नहीं ब्रह्मा बाप को साकार में लेकिन चरित्र सुनकर ब्रह्मा बाप से दिल में मिलन मनाते

फालो कर रहे हैं। ब्रह्मा बाप भी बच्चों पर खुश है। तो फालो को कभी नहीं छोड़ना, बाप दादा दोनों को फालो करो क्योंकि ब्रह्मा बाप ने आप ही जैसा साकार रूप में पार्ट बजाया और पास हो गये। आज का यादगार ब्रह्मा बाप के पास होने का है। फालो फादर है ना। है? फालो करते हो ब्रह्मा और शिवबाबा को? जो फालो कर रहे हैं वह हाथ उठाओ। अच्छा सभी उठा रहे हैं। बहुत-बहुत बधाई हो, बधाई हो।

आज अमृतवेले अव्यक्त ब्रह्मा बाप ने विशेष दिल से अति स्नेह रूप से एक एक बच्चे को बहुत स्नेह से इमर्ज कर, साकार में इमर्ज कर बहुत यादप्यार दिया है। आपने देखा इतना प्यार साकार रूप में बाप देता जो देखते ही दिल में सम्पूर्ण बनने का उमंग-उत्साह आ जाये। तो आप सबके मन में ब्रह्मा बाप समान साकार में पार्ट बजाने का स्मृति में रहता है ना! देखा नहीं, सुना तो है ना! ब्रह्मा बाप ने साकार में क्या क्या किया। कैसे प्रीति की रीति निभाई। सेवा भी की प्रीति की रीति भी निभाई। फालो फादर करने वाले हो ना! हाथ उठाओ जो करने वाले हैं, कर रहे हैं। कर भी रहे हैं, कर रहे हैं क्योंकि ब्रह्मा बाप से सबका प्यार है। भले साकार में नहीं देखा लेकिन ब्रह्मा बाप की पालना सुनते ही फालो करने का संकल्प दिल में आता है।

तो आज ब्रह्मा बाप का विशेष यादगार दिन है और ब्रह्मा बाप ने सभी बच्चों को हर ज़ोन को इमर्ज किया। ज़ोन में तो आप सब होंगे ना। तो एक एक को यादप्यार दिया। याद मिली? हाथ उठाओ। बहुत प्यार से याद किया वाह बच्चे वाह! सिकीलधे बच्चे वाह! और अभी भी ब्रह्मा बाप तो अव्यक्त रूप में मिलते रहते हैं। तो सभी बापदादा के पालना में चल रहे हैं ना! कि कभी-कभी मिस भी करते हैं? जो चल रहे हैं, अटेन्शन है, ब्रह्मा बाप और शिव बाप दोनों में फालो करने का उमंग उत्साह है वह हाथ उठाओ। अच्छा। भले ब्रह्मा बाप को कई बच्चों ने देखा नहीं है लेकिन जानते तो हैं ना हमारा बाप। ब्रह्मा बाप को याद करते सहज साकार में पालना में ताकत आती है। कईयों को मुश्किल लगता है ना! आज की दुनिया में फालो करना मुश्किल भी लगता है लेकिन ब्रह्मा बाप ने कितना पार्ट एक्यूरेट बजाया। ऐसे ही फालो फादर। ब्रह्मा बाप ने भी तो सामना किया लेकिन पास हो गये। तो आप सबका भी यह दृढ़ संकल्प है कि अन्त तक पार्ट बजाते पार्ट में पास होना ही है, हुआ ही पड़ा है। हुआ पड़ा है कि होना है! हुआ पड़ा है निश्चय है ना! हमारी विजय पाने की मौसम है, संगमयुग की विशेषता है। तो समय की विशेषता को यूज़ करते चलो। वरदान है संगमयुग को, बापदादा को फालो करने का। तो सभी वरदान यूज़ करते हैं, हाथ उठाओ। ब्रह्मा बाप और शिव बाप, बापदादा का वरदान चला रहा है।

आज तो ब्रह्मा बाप का यादगार दिन है। तो सुबह से लेके ब्रह्मा बाप को सालों साल साकार में पालना करने का अटेन्शन रहा ना। ब्रह्मा बाप ने कैसे किया! कितना प्यार निराकार बाप से लिया और दिया। तो आज ब्रह्मा बाप को देखने वाले तो कम है लेकिन जिन्हों ने ब्रह्मा बाप को साकार में देखा वह लम्बा हाथ उठाओ। अच्छा। यह सब, मैजारिटी यह तरफ (बहिनों की तरफ) पीछे आये हैं। हाँ जो ब्रह्मा बाप के समय में आये वह हाथ उठाओ। पीछे आने वाले हाथ नहीं उठा रहे हैं। तो आज ब्रह्मा बाप ने विशेष सभी बच्चों को चाहे पुराने चाहे नये दोनों को बहुत-बहुत दिल से याद दी है। आ गये ब्रह्मा बाप सामने। सामने आ गया, हाथ उठाओ। सभी के दिल में आ गया क्योंकि चित्र तो सबने देखा है।

तो आज का दिन याद तो साथ-साथ बापदादा दोनों आते हैं लेकिन आज विशेष दिन के कारण जिन्होंने पालना ली है ब्रह्मा बाप द्वारा उन्हों को याद ज्यादा आती है। तो ब्रह्मा बाप ने जो साथ रहे, प्रैक्टिकल पालना ली उन्हों को विशेष याद सिर पर हाथ घुमाके ऐसे करते दी है, दी तो सभी को है लेकिन पहले उन्हों को दिया फिर सभी को दिया। तो आज ब्रह्मा बाप का दिन होने के कारण विशेष ब्रह्मा बाप की याद आप हर एक को ब्रह्मा बाप ने दी है। अच्छा। अब तो समय हुआ है, आज कौन मिलना है?

सेवा का टर्न इन्दौर ज़ोन का है, होस्टल की कुमारियां भी आई हैं, टोटल 7 हजार आये हैं:- बहुत अच्छा। बहुत करके इन्दौर वाले आये हैं। इन्दौर वाले हाथ उठाओ। मुबारक हो। अच्छा है। सन्देशी जब भी वतन में जाती है तो ब्रह्मा बाप खास बच्चों को वाह बच्चे वाह करके याद करते हैं। अच्छा - इन्दौर वाले सब पुरुषार्थ में आगे से आगे हैं ना! कोई पीछे नहीं रहना। पीछे रहने वालों को प्राप्ति भी तो पीछे होगी ना, इसलिए सदा नम्बरवन। हमेशा हर कार्य में नम्बरवन जाना ही है। चाहे अभी इन्दौर ज़ोन है लेकिन आये तो सभी ज़ोन हैं तो खास आज इन्दौर को और सभी को ब्रह्मा बाप की तरफ से विशेष यादप्यार है। इन्दौर वाले हाथ उठाओ। बहुत अच्छा पार्ट बजाया, सर्विस का फल स्वयं भी लिया औरों को भी दिया, अच्छा किया।

डबल विदेशी 400 आये हैं :- खास डबल विदेशियों को डबल यादप्यार स्वीकार हो। बापदादा को विश्व कल्याणी प्रसिद्ध करने में विदेशी निमित्त बने हैं। पहले भारत कल्याणी थे अभी विश्व कल्याणी नाम प्रसिद्ध है। तो विदेश ने कमाल की ना! बापदादा भी विशेष विदेशी बच्चों को दिल से आफरीन देते हैं। पहचान तो लिया लेकिन सेवा भी कर रहे हैं। विदेश की सेवा हमेशा सुनते रहते हैं। अच्छे उमंग-उत्साह से आगे बढ़ रहे हैं और बढ़ते रहेंगे। (ताली बजाओ)

कलकत्ता के ग्रुप ने तीनों स्थानों पर फूलों का अच्छा श्रृंगार किया है:- जिन्होंने फूलों का श्रृंगार किया वह अभी हैं। अच्छा। भले आये, जी आये। बापदादा बच्चों को देखके खुश होते हैं। अपने घर में आये हैं ना। यह तो सेवा के कारण अलग-अलग गये हैं। बाकी हैं तो सभी मधुबनवासी। अच्छा।

बापदादा को तो हर एक बच्चा दिल में समाया हुआ है। चाहे कहाँ भी रहते हैं देश में या विदेश में। लेकिन दिलाराम के दिल में समाया हुआ है। अच्छा।

दादी जानकी से:- (लण्डन जा रही है इसलिए खुश है) सदा खुश है। बाप साथ देंगे।

निर्वैर भाई से:- तबियत ठीक है। हिसाब पूरा हुआ। अभी वह हिसाब तो पूरा हुआ। सेवा हुई। अच्छा।

मोहिनी बहन से:- खुश रहती हो खुशी चला रही है। बाप की याद के साथ खुशी भी चला रही है।

बृजमोहन भाई से:- (ओ.आर.सी वालों की और मोहित भाई की याद दी) उसको याद देना, टोली भेज देना।

रमेश भाई से:- तबियत ठीक है।

गोलक भाई से:- ठीक है। सदा ठीक रहना ही है और कोई सवाल ही नहीं। (सभी के लिए) सब ठीक रहने वाले हैं।

''अचानक के पहले अलर्ट रह स्वयं को पावरफुल बनाओ, खुशमिजाज़ रह सन्तुष्टता का वायुमण्डल बनाओ साथ-साथ हर एरिया में सन्देश देने का कार्य पूरा करो, अब कोई का भी उल्हना रह न जाए''

आज की सभा स्नेही और स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित दिखाई दे रही है। हर एक के मन में विश्व कल्याण का उमंग उत्साह समाया हुआ है। चाहे सम्मुख हैं चाहे दूर हैं लेकिन सारा ब्राह्मण परिवार दिल के स्नेह में समाया हुआ है। यह स्नेह, परमात्मा और आत्मा के मिलन का स्नेह अति न्यारा और अति प्यारा है। आज बापदादा चारों ओर बच्चों को समर्थ रूप में देख रहे हैं। जहाँ समर्थ है वहाँ व्यर्थ स्वत: ही समाप्त हो जाता है। समर्थ बाप और समर्थ बच्चे, यह समर्थ आत्मा और परमात्मा का मिलन अति प्यारा और न्यारा है और यह मिलन सिर्फ संगम पर ही मिलता है। परमात्मा और आत्माओं का यह साकार मिलन कोटों में कोई आत्माओं को अनुभव होता है। यह परमात्मा और आत्माओं का मिलन कल्प में अब संगम पर ही होता है और वह सौभाग्यशाली क्या पदम भाग्यशाली आत्मायें आप सम्मुख मिलन मना रहे हैं। सबके दिल में इस समय यही मिलन का भाग्य प्राप्त होता है। सबके मन में मेरा बाबा, मेरापन है।

बापदादा अभी इस समय यही चाहते हैं कि और भी आत्माओं को यह अनुभव कराओ ''मेरा बाबा'' और वर्से का अधिकारी बनाओ। आज संसार में दु:ख अशान्ति या अल्पकाल का सुख फैला हुआ है। उन आत्माओं को सदा के सुख शान्ति का थोड़ा सा भी अनुभव जरूर कराओ क्योंकि इस समय ही अनुभव करा सकते हो। इस समय को वरदान है आत्माओं को परमात्मा से मिलाने का। सारे कल्प में आत्मा परमात्मा का मिलन, परिचय, सम्बन्ध, वर्सा इस समय ही प्राप्त होता है। तो अब हर एक बच्चे को, जो अधिकारी हैं उन्हों को सदा उन आत्माओं के ऊपर तरस आना चाहिए कि कोई भी आत्मायें चाहे देश, चाहे विदेशी वंचित रह नहीं जायें। आपका विशेष कार्य यही है कि किसी भी प्रकार से कोई एरिया ऐसी नहीं रह जाये जो उल्हना दे हमें परिचय ही नहीं मिला। सर्विस तो चारों ओर कर रहे हो लेकिन कोई भी आसपास की एरिया रह नहीं जाये, उल्हना नहीं मिले, हमारा बाबा आया और हमको पता नहीं पड़ा। यह जिम्मेवारी आप निमित्त बने हुए बच्चों की है। जहाँ तक हो सकता वहाँ सन्देश जरूर दे दो। नोट करो कौन सी एरिया रही हुई है! जो उल्हना रह नहीं जाये कि हमें तो पता नहीं पड़ा। पता देना आपका कर्तव्य है, जाने नहीं जाने, वह जानें। तो हर एक अपनी एरिया के आसपास चेक करो कोई भी एरिया सन्देश के बिना रह नहीं जाए। भाग्य हर एक का खुद है लेकिन सन्देश देना आप भाग्यवान आत्माओं का कर्तव्य है। हर एक को अपनी एरिया या आसपास की एरिया को चेक करना चाहिए कि हमारी एरिया का वह उल्हना रह नहीं जाये कि हमें तो पता ही नहीं पड़ा। चाहे छोटा गांव है, चाहे बड़ा गांव है, शहर है, सन्देश देना आप भाग्यवान आत्माओं का काम है, यह चेक करो हमारे आसपास की एरिया में सन्देश पहुंचा है? किसी भी एरिया का उल्हना नहीं रह जाए क्योंकि मैजारिटी मुख्य शहरों में पहुंच तो गये हो लेकिन फिर भी चेक कर लो कोई भी एरिया रह नहीं जाये जो आपको उल्हना देवे हमारा बाप आया और हमें पता नहीं दिया। चेक तो करते हो, बापदादा देखते हैं फिर भी अपनी-अपनी एरिया जहाँ तक पहुंच सकते हो और कोई नहीं पहुंचा है वहाँ सन्देश देना आपका कर्तव्य है। चाहे छोटी एरिया है लेकिन आपके एरिया के नजदीक है तो आप नोट करो, छोटी-छोटी एरिया वाले भी आपको उल्हना दे सकते हैं, हमारा बाप आया हमको मालूम पड़ा, हमारा बाप है क्योंकि सबका बाप है ना, तो आपने क्यों नहीं बताया! इसलिए

चेक करो अपनी एरिया के चारों ओर सन्देश पहुंचा है? फिर आपकी जिम्मेवारी पूरी हुई। ऐसे नहीं हो कि छोटी एरिया है, लेकिन उस एरिया के हैं तो बच्चे ना! किसी को भी भेजके कम से कम पता तो पड़े कि हम सबका बाप आया है। चाहे किसी भी प्रोग्राम से अपनी एरिया को सारा पूरा करो, अगर छोटी एरिया तो कोई छोटे को भेजो लेकिन वंचित नहीं रह जाए क्योंकि समय अचानक आना है, बताके नहीं आयेगा। अपना चारों ओर सन्देश देने का कर्तव्य अवश्य देखो। मानो आपकी एरिया में कोई सेवा नहीं है, एरिया में तो जो साथी एरिया वाले हैं उनको बताके उन्हों को निमित्त बनाओ, कोई आत्मा रह नहीं जाये। सन्देश मिलना चाहिए, बाकी उन्हों का भाग्य। तो हर एक अपनी एरिया को चेक करना, चाहे छोटी ही गली है, साधारण लोग हैं, लेकिन बच्चा तो है ना, बाप आया है यह पता तो होना चाहिए। चाहे किसी भी रीति से करो, उल्हना नहीं रह जाए कि हमें तो पता ही नहीं पड़ा। यह आप लोगों का फर्ज है क्योंकि कोई भी हालत अचानक किसी समय भी आ सकती है। अपना फर्ज पूरा करो। चाहे किसी को भी भेजो लेकिन उल्हना नहीं रह जाए हमको तो पता ही नहीं पड़ा। किस एरिया के तो नजदीक होगा ना क्योंकि अचानक कुछ भी खिटखिट शुरू हो सकती है। अपना फर्ज आसपास का एरिया देख चेक करो कोई रही हुई तो नहीं है! अगर दूसरे की एरिया है तो उससे राय करो, ऐसे बिना राय के नहीं करो, राय करो और पूरा करो क्योंकि अचानक कुछ भी हो सकता है इसलिए आज बापदादा चाहे देश, चाहे विदेश सभी बच्चों को इशारा दे रहे हैं कि अपनी एरिया को चेक करो, राय करके बड़ों से उस द्वारा कराओ लेकिन रह नहीं जाये। मीटिंग करते हो ना, उसमें एक दो से राय कर सकते हैं। बापदादा यही कहते हैं कि समय अचानक आना है इसलिए कर लेंगे, हो जायेगा, यह कोई कोई का संस्कार होता है, तो रह नहीं जाये। यह बापदादा सभी को इशारा दे रहे हैं। अपनी एरिया को चेक करो। अगर दूसरा कोई करने चाहे तो उससे भी कराओ क्योंकि समय पर कोई भरोसा नहीं, छोटी-छोटी बातें तो अचानक हो ही जाती हैं। आप अपनी एरिया को देख लो, आसपास जितनी भी आपकी एरिया बनती है वहाँ सन्देश रहा हुआ तो नहीं है! उल्हना तो नहीं मिलेगा!

बाकी आप सभी बाप के सिकीलधे बच्चे जो बाप के बन गये, वह कितने सिकीलधे हैं। बापदादा भी सिकीलधे बच्चों को देख खुश होते हैं, वाह बच्चे वाह! पुरुषार्थ में थकना नहीं, कोई भी छोटी-मोटी बात आती है, मदद लो। नहीं तो किससे मदद नहीं लेनी है तो योगबल से चेक करके उसका कोई न कोई सहयोग ढूंढो।

हर एक चेक करना कि मेरी एरिया में से कोई रह तो नहीं गया कि हमको सन्देश ही नहीं मिला। आप सोचेंगे बापदादा आज ऐसे क्यों कह रहे हैं? क्योंकि बापदादा ने देखा है कि कई बच्चों की नजदीक की एरिया जिनकी जिम्मेवारी है लेकिन वह पूरी नहीं कर रहे हैं इसलिए बापदादा इशारा दे रहे हैं कि कोई की भी एरिया रह गई हो, कारणे अकारणे तो उसका हल ढूंढो सन्देश जरूर दो। आज बापदादा इशारा दे रहा है कोई उल्हना नहीं रह जाए क्यों आप देखेंगे, उन्हों की एरिया को चेक करेंगे, उन्हों को पुरुषार्थ में चलायेंगे, उसमें भी टाइम चाहिए। तो अभी अपनी अपनी एरिया को चेक करना। कोई एरिया उल्हना नहीं दे कि हमको पता नहीं पड़ा। अगर सर्विस करने वालों की मदद चाहिए तो अपने ज़ोन को बोलो, वह मदद करे। तो आज बापदादा सेवा का इशारा दे रहा है, सेवा के साथ और क्या इशारा है? स्वयं को सम्पन्न बनाने का। ऐसे नहीं कि सेवा में इतने बिजी हो जाओ तो स्वयं को देखने का समय नहीं मिले। स्वयं को भी देखो और समय को भी देखो। बाकी सभी खुशमिजाज़ रहते हो, अगर खुशमिजाज़ नहीं रहते तो जिसमें फेथ हो, भावना हो उससे सहयोग लो क्योंकि बापदादा जानते हैं कि छोटी-छोटी बातें किस समय भी आ सकती हैं इसलिए अपने को अलर्ट रखना, अपना फर्ज है। कोई कितना भी कहे लेकिन स्वयं, स्वयं को अलर्ट करना है।

तो आज बापदादा सेवा और स्वयं दोनों को एवररेडी करने के लिए इशारा दे रहे हैं। सन्तुष्टता का वायुमण्डल हर स्थान पर होना चाहिए। अगर असन्तुष्टता है तो किसी भी सहयोग से, क्योंकि होना है छोटा छोटा हो या बड़ा हो लेकिन उसके लिए स्वयं को पावरफुल जरूर बनना है। आज बापदादा इसी पर इशारा दे रहे हैं कि अचानक के लिए तैयार रहो। फिर ऐसे नहीं कहना यह तो पता ही नहीं था, होना है, होगा अचानक। आप सबके मन से हल्का हो जायेगा तभी होगा इसलिए बापदादा इशारा दे रहे हैं कि अपने आपको चेक करो। बाप समान जो बाप चाहता है, जानने में तो सब होशियार हैं, तो जो बाप चाहता है मन्सा-वाचा-कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क इन सब बातों में ऐसी अवस्था है, जो कुछ भी अचानक हो तो सामना कर सकेंगे? इन्टरनल पावर आत्मा सदा अटेन्शन में रहे, सदा तीव्र पुरुषार्थी रहे। स्व परिवर्तन और चारों ओर भी परिवर्तन में सहयोगी बनने में, दोनों बात में चेक करना।

बाकी सभी ओ.के. हैं, हाथ उठाओ। ओ.के., ओ.के., ओ.के. हैं? अच्छा बापदादा आगे का हाथ तो देख रहे हैं, पीछे का दिखाई नहीं देता। अभी पीछे वाले उठाओ। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत बापदादा का सिक व प्रेम सहित यादप्यार स्वीकार हो। ऐसे कोई नहीं सोचे कि हमको तो बाबा का प्यार पता ही नहीं, ऐसा है कोई। कोई है? नहीं है ना! पता तो है ना! परमात्म प्यार क्या होता है! है पता? अच्छा पता वाले हाथ उठाओ। सभी उठा रहे हैं और लम्बा उठाओ। नीचे करो। देखो, बापदादा ने देखा हाथ तो मैजारिटी उठा रहे हैं, कोई बीच में रह गया हो वैसे मैजारिटी ने उठाया है। अगर कोई अन्दर में समझे, हाथ उठाने में शर्म आवे तो भी अगर कोई विघ्न है या कोई हलचल है तो अपने दादियों को या जिसमें भी आपका फेथ हो, बड़ी दादी या दादियों में उनको सुना देना, रखना नहीं अन्दर कोई न कोई इलाज ले लेना क्योंकि होना है, तो अचानक होगा। उस समय पुरुषार्थ कर नहीं सकेंगे। अभी चेक करो, कुछ भी अचानक हो जाए, हलचल हो जाए तो इतनी शक्ति है जो स्वयं को बचायें, वायुमण्डल में यह प्रभाव डालें, औरों के भी मददगार बनें। यह चेक करना। समझा ना सभी ने। समझा। समझदार तो बहुत हो। नहीं, बापदादा को अच्छा लगता है। ऐसे ही नहीं कहते हैं। समझदार तो हो लेकिन कभी-कभी समय पर थोड़ा टाइम लगाते हैं।

अच्छा। चारों ओर के बच्चों को दूर वालों को भी और नजदीक वालों को भी बहुत-बहुत मुबारक है जो अपने ऊपर अटेन्शन दे रहे हो। धोखा नहीं खाना, अटेन्शन दो, दे रहे हो और देते रहना। कोई भी मदद चाहिए तो निमित्त बने हुए द्वारा ले सकते हो। ऐसे नहीं कोई कहे किससे लेवें, निमित्त का पता है, दादियां हैं ना! दादें हैं दादियां भी हैं। कोई भी गलती रखना नहीं, अगर हो भी गई तो बापदादा से दिल में पश्चाताप करके उसको खत्म करना। जमा नहीं करो। बापदादा हर एक का खाता देखे तो कैसे खाता हो? ओ.के., वेरी गुड। ऐसे है? अच्छा, इसमें हाथ उठाओ। हाथ तो सब उठा रहे हैं। देखो, आप दादी आओ, हाथ देखो। हाथ उठाओ, सब ठीक हैं? सब ठीक हैं, हाँ। आओ दादी, दादी को ले आओ। आज मोहिनी नहीं आई है क्या? अच्छा आ गई।

सेवा का टर्न पंजाब ज़ोन का है, 8000 आये हैं:- पंजाब वालों को वरदान है। पहले-पहले अमृतसर में सेन्टर खुला था तो गुरुओं का बहुत था, लेकिन पंजाब वालों ने सबके ऊपर जीत पाई और अपने सेन्टर निर्विघ्न चलाने दिये, इसके लिए पंजाब वालों को बापदादा भी धन्यवाद दे रहे हैं। गुरुओं के स्थान पर सद्गुरू की जीत करके दिखाई। अच्छा किया। गुरुओं की गद्दियों के बीच में ब्रह्माकुमारियों का सेन्टर अमर रहा और निर्विघ्न चलता था। निर्विघ्न चला ना, पंजाब वाली टीचर्स हाथ उठाओ। अच्छा। मेहनत अच्छी की है और अभी भी पंजाब का टर्न है ना।

मोहिनी बहन से:- ठीक है ना! (बाबा आपके वरदान से मैं ठीक हूँ) मुबारक है। ठीक है और ठीक रहेंगी। भले

कुछ भी हो, बाबा मेरा बाबा, यह दवाई है। अच्छी रहेंगी। कोई बात नहीं। यह बीच-बीच में होता है। अच्छा।

मुन्नी बहन से:- बहुत अच्छी मेहनत कर रही हो, उसकी सफलता है और ऐसे ही जैसे चलती हो वैसे अच्छे ते अच्छा चला रही हो, चलाती रहेंगी। जो भी कोई यहाँ वहाँ से इशारा आवे वह कर लिया, बस। और अच्छा चल रहा है।

डबल विदेशी भाई बहिनों से:- अच्छा। यह सब डबल विदेशी हैं। (200 आये हैं) डबल विदेशी आजकल देखा है हर ग्रुप में कुछ न कुछ होते हैं। अच्छा, अपना पार्ट बजा रहे हैं। विदेश की सेवा भी अच्छी कर रहे हैं लेकिन जितनी सेवा करते हैं ना उतना समाचार कम देते हैं। कोई ऐसा मुकरर हो जो मास दो मास के बाद सब तरफ की रिजल्ट लिखके भेजे। अच्छी सेवा में वृद्धि है, पुरुषार्थ भी अच्छा कर रहे हो। (कराची से एक भाई आया है) अच्छा है, कराची जन्म स्थान है ना। ऐसे स्थान की सौगात आवे तो कितने महान हैं। अच्छा बापदादा को समाचार मिलता है, अच्छा चल रहा है। जो भी आते हैं, इसमें कराची वाले कोई और हैं? एक ही है। बहुत अच्छा, अच्छा लगा ना! विदेशियों को देख बापदादा को अपना वर्ल्ड कल्याणकारी टाइटिल याद आता है क्योंकि पहले था इन्डिया अभी विदेश भी हो गया, तो इसीलिए बापदादा विदेश सेवा को सदा याद रखता है। पहले सिर्फ इन्डिया कल्याणकारी था अब विदेश चारों ओर फैला हुआ है, कोई एरिया अभी भी रही हुई है वह भी एड हो जायेगी लेकिन विदेश एड हो गया है। अच्छी मेहनत की है। रिजल्ट विदेश की भी अच्छी है। अच्छा।

निर्वैर भाई से:- तबियत ठीक है, ठीक हो रहे हैं। हॉस्पिटल की चिंता नहीं करो। सभी से राय करके मीटिंग में फाइनल करना। सिर्फ यह सोचो कि एक हॉस्पिटल आबू के कारण खाली पड़ी है तो इतना बड़ा प्रोग्राम करेंगे तो आबू में कौन आयेंगे? हॉस्पिटल के बारे में सबकी राय पहले लो। राय लेना चाहिए कि यहाँ आबू में दूसरी हॉस्पिटल खोलें?(उसी हास्पिटल के साथ एडीशन करेंगे) लेकिन दूसरी होगी ना। वह प्लैन बनाना फिर देखेंगे। प्लैन दिखाना।

बृजमोहन भाई से:- (गीता के भगवान के बारे में) उसके लिए टॉपिक थोड़ी चेंज करो। (अहिंसा की टापिक आपने बताई थी वही चालू रखें?) थोड़ा चेंज करो। अहिंसा परमोधर्म नयी बात तो थी लेकिन आकर्षण वाली थोड़ी प्वाइंट निकालो, थोड़ा चेंज करो, सोचो थोड़ा। सभी सोचें जिसमें टापिक पर ही आकर्षण हो जाए, अभी यह सोचते हैं हमारा क्या जाता, क्या भी हो। लेकिन समझें हमारा भी फायदा है। ऐसे सोचो।

पंजाब की बड़ी बहिनें:- पंजाब तो मशहूर है। पंजाब से कुमारियां अच्छी निकली हैं। भाई भी अच्छे निकले हैं। जिससे टोटल पंजाब अच्छा चल रहा है। एक दो को सहयोग देके अच्छा उन्नति को पा रहे हैं। अभी और उन्नति करो, आवाज निकालो। आवाज नहीं निकला है। (हरिद्वार में संत सम्मेलन करें) कुछ हलचल कराओ। शान्ति से सुन रहे हैं, कुछ उसका कुछ उसका मिक्स होता है लेकिन ओरीज्नल क्या है, उसको थोड़ा प्रसिद्ध करो। फिर जो अपने होंगे वह निकलेंगे। क्यों? वहाँ के कोई साधू जो बड़े मशहूर हैं, उनमें से कोई निकले, यह सेवा करो। वह कहे ब्रह्माकुमारियों का ज्ञान हमने जीवन में लाया, ऐसे कोई मिसाल निकालो। बैठे तो हैं सभी, चाहे कोई की भी पंजाब में मदद लो, इन्डिया की लो, सबकी ले सकते हैं। यह आवाज निकले कि ब्रह्माकुमारियां कृष्ण के बजाए शिव कहती हैं। यह आवाज निकले। यह पंजाब की सेवा है। तो यह आवाज निकलना चाहिए ना। पंजाब को प्राइज देंगे अगर यह आवाज निकालेंगे। चाहे मानें नहीं मानें लेकिन यह तो कहें इन्हों का यह मत है। और इस पर सभी का सोच चले। करो कोई कमाल। सभी मिलके राय करो। अच्छा है। शान्ति से चल रहा है ना, सब चुप हो गये हैं।

जालंधर की राज बहन बीमार है आ नहीं सकी है:- उसके लिए टोली ले जाओ।

जयन्ती बहन ने कहा - बाबा दादी जानकी को आपने 8 दिन के लिए लण्डन भेजा, उसके लिए बहुत-बहुत थैंक्स: सब खुश हो गये ना। ठीक है, जो ड्रामा में था वह अच्छा हुआ।

''परमात्म प्यार के पात्र बच्चे प्यार लेते और देते हुए फालो फादर कर स्वयं भी निर्विघ्न बनो और अपने नजदीक साथियों को भी निर्विघ्न बनाओ''

आज प्यार के सागर चारों ओर के हर बच्चे को बहुत-बहुत-बहुत प्यार दे रहे हैं। यह परमात्म प्यार सारे कल्प में अब संगम के समय ही प्राप्त होता है। दुनिया वाले आज के दिन को प्यार का दिन कहते हैं लेकिन आप बच्चों के लिए संगमयुग का हर दिन बाप के प्यार को प्राप्त करने का है। आज दिन के यादगार प्रमाण बापदादा के सामने आप बच्चे हो लेकिन बापदादा के दिल में चारों तरफ के बच्चे चाहे फारेन में हैं, चाहे गांव में हैं लेकिन हर बच्चा बाप के दिल का दुलारा है। वैसे तो यह संगमयुग ही परमात्म प्यार के आप पात्र हो लेकिन आज विशेष आज की दुनिया के हिसाब से प्यार का दिन है तो बापदादा भी चारों तरफ के एक-एक बच्चे को बेहद का प्यार, दिल का प्यार, सदा उमंग-उत्साह में उड़ने का प्यार एक-एक बच्चे को, प्यार के पात्र बच्चों को, हर बच्चे को सामने लाए दे रहे हैं। आप तो सामने हैं साकार में लेकिन बापदादा के सामने चारों ओर के बच्चे, प्रेम के पात्र बच्चे प्यार दे और प्यार ले रहे हैं। वैसे तो आज के दिन को मनाने के कारण कहते हैं लेकिन हर बच्चा हर संगम के समय परमात्म प्यार के पात्र हैं। यह प्यार की पात्र आत्मायें बाप के अति प्यारे, बाप के लाडले बच्चे हैं। यह परमात्म प्यार सिर्फ संगमयुग के एक जन्म में ही प्राप्त होता है। यह प्यार अनेक जन्म के दु:ख दर्द को समाप्त कर सदा खुशी की खुराक खिलाने वाला है। हर एक बच्चा परमात्म प्यार के अधिकारी आत्मायें हैं। आज के दिन बापदादा हर बच्चे को दिल का प्यार ले भी रहे हैं, दे भी रहे हैं। आप सब भी प्रेम स्वरूप आत्मा बन अपना स्वरूप दिखाए रहे हो। हर एक बच्चे के नयनों में, मस्तक में परमात्म प्यार समाया हुआ है। अभी आप हर एक को अन्य भाई और बहिनों को परमात्म प्यार के पात्र बनाने का उमंग-उत्साह सदा दिल में रहता है।

बापदादा आज देख रहे हैं हर एक बच्चे के मन में उमंग-उत्साह है कि बाप समान बनना ही है। फॉलो फादर करने वाले हो ना! जैसे बाप का सदा हर बच्चे से चाहे पुरुषार्थ में नम्बरवार हैं फिर भी बाप का प्यार सदा हर बच्चे के साथ है। हर बच्चे को अमृतवेले बापदादा विशेष चारों ओर यादप्यार और शक्तियां वरदान में देते हैं। ऐसे प्रभु पात्र बच्चों का भाग्य है, अब बापदादा का एक और संकल्प है, सुनायें? सुनायें, करना पड़ेगा। करने वाले हाथ उठाओ। हिम्मत तो बहुत अच्छी है, बापदादा खुश है और हिम्मते बच्चे मददे बाप भी है। अब यह कमाल दिखाओ - हर बच्चा निर्विघ्न बन बाप समान बनें। लक्ष्य तो सबका है लेकिन बीच-बीच में कोई विघ्न थोड़ा ढीला भी कर देती है। अब बाबा यही चाहते हैं कि हर एक अपने को लक्ष्य रख करके निर्विघ्न, मन्सा, चाहे वाचा, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में निर्विघ्न सदा बाप समान बन औरों को भी उमंग-उत्साह में लाकर उनके सहयोगी बन उन्हों को भी निर्विघ्न बनावे। हर एक अपने सेवा स्थान को निर्विघ्न बनाकर सभी की दुआयें ले। हर एक सेवाकेन्द्र या हर एक जहाँ भी है, घर में है, चाहे सेन्टर पर है, यह दृढ़ संकल्प करे और करके दिखावे कि मैं निर्विघ्न हूँ और साथियों को भी निर्विघ्न बनाने की सेवा करूंगा। कम से कम हर सेन्टर को अपने-अपने साथियों के सहयोगी बन निर्विघ्न बनाने की सेवा में सफल बनें। बापदादा अभी चाहे सेवाकेन्द्र, चाहे स्वयं कहाँ भी रहते हैं, स्वयं को निर्विघ्न, संकल्प मात्र भी व्यर्थ समाप्त, ऐसे बने और बनायें, यह हो सकता है?

तो आज से देखो सभी हाथ उठा रहे हैं। पीछे वाले हाथ हिलाओ। अच्छा। तो आज से स्वयं को निर्विघ्न और जहाँ भी रहते हैं, उस स्थान को, साथियों को निर्विघ्न बनायेंगे – यह दृढ़ संकल्प करते हो अभी से? साथियों को भी बना सकते हो? इसमें हाथ उठाओ। सोच-सोच के उठा रहे हैं। जब आप विश्व परिवर्तक अपने को कहलाते हो तो विश्व के परिवर्तन के पहले जहाँ भी हैं उस स्थान को तो निर्विघ्न बनायेंगे ना! लक्ष्य रखो जैसे अपने को निर्विघ्न बनाया है, संकल्प में सफलता है वैसे साथियों को, वायुमण्डल को भी बनायेंगे तब तो अपना राज्य आयेगा ना! तो अभी आज के दिन बापदादा यही काम देते हैं कि खुद तो बने हैं, बापदादा खुश है लेकिन साथियों को भी निर्विघ्न बनायें क्योंकि अपना राज्य स्थापन करना है ना तो राज्य में तो सभी होंगे ना! तो संकल्प करो, साथियों की भी, जहाँ तक हो सकती है, मदद लो। मदद लेके भी बनाना है। यह संकल्प कर सकते हो? कर सकते हो हाथ उठाओ। हाथ तो सभी उठा रहे हैं? बहुत अच्छा। अच्छा है, हिम्मत है, चाहे कैसा भी है लेकिन आपका वायुमण्डल इतना पावरफुल हो जो अपने वायुमण्डल

को जहाँ तक आपका वायुमण्डल है, वहाँ तक हर एक निर्विघ्न हो। यह हो सकता है? हो सकता है? जो समझते हैं हो सकता है वह हाथ उठाओ। पीछे वाले हाथ उठा रहे हो, ऐसे ऐसे करो। हाथ उठाके तो खुश कर दिया, मुबारक हो। अच्छा है संकल्प तो किया ना, करना है। क्यों? अपने साथ रहने वाले या सम्पर्क वाले उन्हों को तो साथी बनाना है ना! भले नम्बरवार बनेंगे, यह तो बाप भी जानते हैं लेकिन फर्क तो दिखाई दे ना! तो आज से विशेष संकल्प उत्पन्न करो कि अपने कनेक्शन में, नजदीक वाले उन्हों को भी निर्विघ्न बनाना है। बना सकेंगे? बना सकेंगे? बनायेंगे? पहली लाइन नहीं उठाती है। अपना राज्य तो लाना है ना। तो राज्य में साथी को लाना तो है ना, उसको छोड़ देंगे क्या? एक दो को साथ देके भी लक्ष्य रखेंगे तो हिम्मत आपकी मदद बाप की है। यह हो सकता है? हो सकता है इसमें हाथ उठाओ। हाथ तो सभी अच्छा उठाते हैं। हाथ उठा करके बापदादा को खुश कर देते हैं।

तो बापदादा टाइम देते हैं, अपने कनेक्शन में आने वालों को आप समान साथी बनाओ। चारों ओर ब्राह्मण सदा निर्विघ्न, यह हो सकता है कि मुश्किल है? जो समझते हैं हो सकता है वह हाथ उठाओ। अच्छा। यह पहली लाइन। हो सकता है? तो अगली सीजन तक टाइम देवें कि अभी? अभी हो सकता है? साथियों को आप समान बनाना है। नम्बरवार होंगे लेकिन इतना तो बनाओ जो कोई विघ्न रूप नहीं बनें। यह हो सकता है? विघ्न रूप नहीं बनें? पहली लाइन। हो सकता है? आगे वाले? अच्छा। हिम्मत अच्छी है। तो अगली सीजन में आयेंगे तो यह खुशखुबरी सुनेंगे। यह लायेंगे, जो समझते हैं हम पुरुषार्थ करके थोड़ी मेहनत भी करनी पड़ेगी लेकिन साथियों को, आसपास वालों को निर्विघ्न बनायेंगे, वह हाथ उठाओ। हाथ तो बहुत अच्छा उठा रहे हैं, शाबास हो, शाबास हो। अभी बापदादा हर मास रिजल्ट देखेंगे। कम से कम अपने नजदीक वाले साथियों को तो आप समान बनाना चाहिए ना! बना सकते हैं? बना सकते हैं? अच्छा इसमें हाथ उठाओ। हाथ तो सभी उठा रहे हैं। बापदादा आपको ऐसे सहयोगी बनाने वालों को अभी भी मुबारक दे रहे हैं, और जब फिर आयेंगे तो यह रिजल्ट देखेंगे कि हो गया। हो सकता है? हो सकता है? पहली लाइन नहीं उठाती! क्योंकि सभी निमित्त हो ना तो निमित्त को तो ध्यान देना पड़ेगा। अच्छा है, हिम्मत आपकी, मदद बाप की।

तो अभी करके बाप को दिखायेंगे ना! बापदादा देखेंगे। बापदादा जो प्रैक्टिकल साथियों को ऐसे निर्विघ्न बनायेंगे उनको बापदादा प्रेजेन्ट (इनाम) देंगे। लेकिन आप कहेंगे तो थोड़ा इन्क्वायरी तो करेंगे। इसके लिए तैयार हैं? पहली लाइन। अच्छा है। हिम्मत वालों को बापदादा की मदद है और मिलती रहेगी। अच्छा।

आज का दिन प्यार का दिन है, तो प्यार में तो सब सहज हो जाता है। तो जैसे आप सभी ने हिम्मत रखी वैसे मदद भी बाप करेंगे, साथी भी मदद करेंगे तो प्रैक्टिकल में दिखाई देगा। परिवर्तन तो होना है ना। जो भी छोटी मोटी बात है ना, वह परिवर्तन आपेही कर लो। कहना नहीं पड़े। समझदार तो हो क्या करना है, क्या नहीं करना है! तो जो नहीं करना है वह नहीं कर लो, बस।

बापदादा अभी विश्व परिवर्तक बनने के लिए हर एक को निर्विघ्न बनना और साथियों को बनाना, यह चाहते हैं क्योंकि विश्व परिवर्तक हो, तो एक दो साथियों को बदलना क्या मुश्किल है! तो हर एक ध्यान रखना हमको अपना वायुमण्डल और साथियों को निर्विघ्न बनाना ही है। विश्व को बनाने वाले हो, बापदादा तो छोटा सा काम दे रहे हैं। संकल्प करते हो तो हाथ उठाओ। संकल्प करने वाले। (सभी ने हाथ उठाया) हाथ उठाके तो खुश कर दिया। मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। अभी दूसरे बारी आयें तो खुशखबरी सुनेंगे ना। सुनेंगे, सुनेंगे? इसमें हाथ उठाओ। अपने नजदीक वाले साथियों को निर्विघ्न बनाओ, छोटा सा काम देते हैं, सभी को नहीं कहते हैं। अच्छा।

बापदादा को मजा आता है, जब बच्चे हिम्मत रखते हैं ना तो बापदादा को बहुत खुशी होती है और हिम्मते बच्चे मददे बाप, साथी तो है ही। तो अगले बारी क्या रिजल्ट देखेंगे? हर एक के साथ रहने वाले, नजदीक रहने वाले उसमें परिवर्तन है। ऐसे है ना! यह करेंगे ना? साथियों को आप समान तो बनायेंगे ना! इसमें हाथ उठाओ। हाथ उठाने में तो बहुत अच्छा है। बापदादा खुश होते हैं, हाथ उठाने की भी हिम्मत तो रखी। करने में एक दो के साथी बनना। तो सभी खुश हैं? हाथ उठाओ जो खुश हैं। जो खुशी कभी नहीं गंवाते, सदा खुश? सदा खुश? पीछे वाले सदा खुश हैं? लम्बा हाथ उठाओ। अच्छा। सदा खुश रहना और सदा खुश बनाना। मंजूर है ना! बनाना भी है क्योंकि अपना राज्य स्थापन होना है, करना है तो साथियों को तो साथ लेंगे ना! अच्छा।

ईस्टर्न ज़ोन, तामिलनाडु, नेपाल, आसाम, बंगाल, बिहार, उड़ीसा के 17 हजार आये हैं:-

(सभी को नम्बरवार उठाया) हर एक स्थान की ज़ोन सबजोन इन्चार्ज बड़ी बहिनें उठें,

अभी लक्ष्य रखो कि जो भी एरिया आपको मिली है सेवा के लिए, उनको निर्विघ्न बनाना ही है। आप लोग संकल्प करो क्योंकि राजधानी स्थापन करनी है। आधाकल्प राजधानी चलेगी। तो इसके लिए थोड़ा चक्कर लगाके मेहनत करो जो हेड हैं वह सभी जगह रहके समस्याओं को हल करो। होती तो समस्यायें एक जैसी हैं लेकिन हर एक अपनी एरिया में समस्या समाप्त करके सफलतामूर्त बनें। ठीक है ना। हाथ उठाओ। अच्छा। तो अगले बार जब आयेंगे तो पूछेंगे आपकी एरिया से विघ्न समाप्त हुए? पूछें? क्योंकि बनना तो आप लोगों को ही है, जो भी बैठे हैं उन्हों को ही है, बनके बनाना है। राजधानी स्थापन होगी तो यहाँ से ही संस्कार डालेंगे ना। होगा! कोई बात नहीं है, बापदादा भी मददगार बनेंगे। कोई भी ऐसी प्राबलम हो तो यज्ञ में लिखकर भेजो, ठीक होगा, जैसे मदद हो सकेगी, होगी। निर्विघ्न तो बनना ही पड़ेगा। तब तो अपना राज्य स्थापन होगा। बहुत अच्छा।

डबल विदेशी भाई बहिनें 400 आये हैं:- यह डबल विदेशी, बहुत अच्छा। डबल विदेशियों को बापदादा देख करके खुश होते हैं, वाह डबल विदेशी वाह! क्योंकि आप लोगों ने बाप को विश्व पिता प्रसिद्ध किया है। भारत कल्याणी नहीं विश्व कल्याणी है। पहले थे भारत कल्याणी और अभी चारों तरफ सेवा बढ़ाने से विश्व कल्याणी प्रैक्टिकल में हैं। तो आप लोगों को बहुत-बहुत-बहुत यादप्यार और बहुत-बहुत कमाल करके आगे बढ़ने वाले बापदादा देख रहे हैं। अच्छा पुरुषार्थ कर रहे हैं। भले हर जगह भिन्न भिन्न तो होते हैं लेकिन फिर भी भारत के सिवाए विश्व पिता कहलाने के निमित्त बने हो। अच्छा है। डबल विदेशियों को बापदादा आज डबल प्यार दे रहे हैं। दूर रहते भी, देश दूर है लेकिन दिल नजदीक है। ऐसे है ना! हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। बापदादा भी खुश होते हैं और आगे बढ़ रहे हैं, विदेशी तरक्की कर रहे हैं वहाँ, इसकी भी बधाई हो। अच्छा। एक दो के सहयोगी बनके और निमित्त जयन्ती बहन कहाँ है? यह चक्कर बहुत लगाती है। अच्छी सेवा कर रही है। साथी भी आपके अच्छे हैं। बापदादा डबल विदेशियों को डबल यादप्यार दे रहे हैं। मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा।

चारों ओर के बच्चों को, चाहे देश चाहे विदेश सभी बच्चों को बापदादा दिल का यादप्यार और शुभ बात सुना रहे हैं कि देखा गया है कि चारों ओर विदेश में या देश में भी सेवा के ऊपर अटेन्शन अच्छा है, वृद्धि है और आगे भी वृद्धि करते रहेंगे। मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

मुन्नी बहन से:- सभी खुश हैं, सन्तुष्ट हैं, सेवा कर रही हो करती रहेंगी।

दादी जानकी से:- (बापदादा को गुलाब के फूलों का हार पहनाया) यह हार आप सबके प्यार का है। निमित्त यह पहना रही है लेकिन आप सबका प्यार बापदादा को पहुंच गया। सभी का प्यार बापदादा को पहुंच रहा है। सभी को आगे तो नहीं ला सकते इसीलिए दूर से ही बापदादा वाह बच्चे वाह कह रहे हैं।

मोहिनी बहन:- ठीक है। अच्छी हो गई, अभी अच्छी रहेंगी।

(रतनमोहिनी दादी को गुलबर्गा युनिवर्सिटी से डाक्ट्रेट की डिग्री मिलने वाली है) अच्छा है।

डा.निर्मला दीदी से:- अच्छा सम्भाल रही हो, स्थान भी अच्छा चल रहा है। मुबारक हो।

हंसा बहन से:- जो करता है उसको अन्दर ही अन्दर पुण्य के खाते का अनुभव होता है। होता है? आप दादी को सम्भाल रही हो इसमें सब आ जाता है। एक दादी की सेवा नहीं कर रही हो, अनेकों की सेवा कर रही हो।

तीनों भाईयों ने बापदादा को गुलदस्ता दिया:- ठीक है, अच्छा है। निर्विघ्न हैं सभी। सभी काम ठीक चल रहे हैं और जिसकी बातें हैं, वह भी ठीक हो रही हैं! हो रही हैं ना! मुबारक हो।

बृजमोहन भाई से:- आपने टॉपिक बदली नहीं की? (बदली की है, बापदादा को दिखाई) इससे समझ जायेंगे? जो खास गीता के बारे में था वह इससे थोड़ा छिप गया है। अभी सोचो। सोचेंगे तो ठीक हो जायेगा।

हरिद्वार में संत सम्मेलन कर रहे हैं:- अच्छा है, उन्हों को जगाओ।

रमेश भाई से:- कारोबार ठीक है ना।

डा. बनारसी भाई से:- सेवा ठीक कर रहे हो, मुबारक। थकता नहीं है। अच्छा है। वरदान है आपको।

''शिव अवतरण पर व्यर्थ को समाप्त करने की विशेष सौगात बाप को दो, विशेष अटेन्शन देकर एक मास निर्विघ्न अवस्था की अनुभूति करो''

आज सभी लाडले बच्चों को शिव अवतरण, शिव जयन्ती की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। आज के दिन बापदादा ने देखा कि सवेरे से लेके सभी के दिल में परमात्म अवतरण की, यादगार की बहुत-बहुत खुशी है क्योंकि बाप के अवतरण के साथ आप बच्चों का भी दिव्य जन्म हुआ है। तो बच्चे बाप को मुबारक दे रहे हैं और बापदादा आप एक-एक को आपके भी दिव्य जन्म की लाख गुणा मुबारक दे रहे हैं। हर एक के मन में जन्म से लेके अब तक सारे संगमयुग की यादें दिल में समा रही हैं। आज सबकी बुद्धि में शिव अवतरण की खुशी है और बाप को भी बच्चों के दिव्य जन्म की बहुत-बहुत खुशी है। वाह सिकीलधे मीठे मीठे बच्चे वाह! क्योंकि बाप के साथ आप बच्चों का भी यह अलौकिक दिव्य पूज्यनीय जन्म है। इस संगम पर बाप के साथ अवतरित हो अर्थात् नया जन्म लेके विश्व कल्याण के कर्तव्य के निमित्त बने हो। बाप के साथ आप बच्चे भी हर कर्तव्य में साथी हो। सभी को उमंग-उत्साह है कि इस विश्व को परिवर्तन करना ही है। दिल में उमंग है ना! उमंग है जो हाथ उठाओ। अच्छा।

बापदादा ने भी देखा मैजारिटी बच्चों में अपना राज्य आने की बहुत खुशी है क्योंकि जानते हैं कि हमारा राज्य आया कि आया। यह शिवरात्रि सभी बच्चों को बाप के अवतरण की खुशी दिलाती है। तो आज सबके मन में शिव बाप की याद समाई हुई है। हमारा बाबा आ गया। हमारा राज्य आया कि आया। बापदादा भी बच्चों के उमंग-उत्साह को देख बच्चों के गीत गाते हैं वाह बच्चे वाह! बाप ने देखा कि विशेष सेवा में लगे हुए बच्चे दिनरात खुशी में दिल में गीत गाते हैं हमारा राज्य आया कि आया। अब उस राज्य में जाने की तैयारी जानते तो हो।

तो आज शिवरात्रि पर हर एक अपने दिल के चार्ट को देखना कि अपने राज्य में जाने के लिए अपने में सम्पूर्णता कितनी लाई है? क्योंकि सम्पूर्ण राज्य में जाना है, जहाँ दु:ख का नामनिशान नहीं, तो अभी से अपनी दिल में सदा निर्विघ्न रहने का संस्कार देखते हो? विघ्न आने के पहले ही निर्विघ्न अवस्था की अनुभूति होती है? अभी बापदादा बच्चों में विघ्न-विनाशक की विशेषता देख भी रहे हैं और देखने चाहते भी हैं। बाप का निर्विघ्न साथी बनकर चलने का पक्का संस्कार कोई-कोई बच्चों का है, अटेन्शन है लेकिन अटेन्शन का अर्थ है नो टेन्शन, इस बात के ऊपर अच्छा ध्यान है क्योंकि अभी आप निमित्त बने हुए बच्चे निर्विघ्न अवस्था के अनुभवी बनेंगे तभी आपके निर्विघ्नता का वायब्रेशन पुरुषार्थी बच्चों को पहुंचेगा।

तो आज बापदादा देख रहे थे निर्विघ्न स्थिति कितना समय रहती है? कोई-कोई बच्चों की रिजल्ट अच्छी अटेन्शन देने की देखी। उन बच्चों को बापदादा आज शिव अवतरण के दिन, यादगार है शिव अवतरण का, तो आज के दिन ऐसे निर्विघ्न रहने का लक्ष्य रखने वालों को बापदादा अवतरण के दिन की मुबारक भी देते हैं और दिलाराम दिल का प्यार भी दे रहे हैं। दिल में गीत गा रहे हैं वाह बच्चे वाह! अटेन्शन देना अर्थात् टेन्शन नहीं, उसकी निशानी है अ टेन्शन, टेन्शन नहीं। तो आज बापदादा चेक कर रहे थे ऐसे बच्चे भी हैं लेकिन सदा अटेन्शन में रहने वाले जितने बाप चाहते हैं उससे कम हैं। तो आज के अवतरण दिवस पर बाप यही चाहते हैं कि हर बच्चा अभी अपने पुरुषार्थ अनुसार अपने पास नोट करे, जो भी समय अपने अनुसार आप फिक्स करो, उतना समय निर्विघ्न रहे क्योंकि आगे चलकर निर्विघ्न का अटेन्शन रखना आवश्यक है इसलिए बापदादा चाहते हैं सारे विश्व के चारों ओर के बच्चे अब अपने हिम्मत के प्रमाण फिक्स करे कि इतना समय मैं आत्मा निर्विघ्न रह सकती हूँ और अटेन्शन से रहके देखें। निर्विघ्न रहना सहज है या मुश्किल है? जो समझते हैं अटेन्शन से सहज है, वह हाथ उठाओ। अच्छा। हाथ उठाओ, ताकत नहीं है तो नहीं उठाओ। तो बापदादा एक मास की रिजल्ट देखने चाहते हैं, सिर्फ एक मास, ज्यादा नहीं बताते हैं। तो एक मास संकल्प में भी निर्विघ्न, व्यर्थ संकल्प भी नहीं, स्टाप कहा स्टाप।

अभी संकल्प के ऊपर अटेन्शन की आवश्यकता है। तो चेक करना हर एक संकल्प में भी निर्विघ्न रहे? व्यर्थ संकल्प भी नहीं। क्या अपने संकल्प शक्ति पर इतना अटेन्शन है? संकल्प अपनी शक्ति है ना! तो निर्विघ्न रहने का प्लैन सोचो, एक मास के लिए चेक करो जो सोचा वह हुआ? क्योंकि माया भी सुन रही है। कितनी भी वातावरण की माया हो, लेकिन वातावरण का प्रभाव मन के शुभ संकल्प में विघ्न रूप नहीं बने, इसमें सफलता हो, तो 15 दिन के अन्दर चेक करना - व्यर्थ संकल्प भी नहीं, सदा दिल में बाप समाया हुआ है? अभी कुछ समय इस बात पर, संकल्प के पुरुषार्थ पर अटेन्शन देना। वाणी और कर्म तो मोटी चीज़ है लेकिन संकल्प भी व्यर्थ न हो क्योंकि एक एक संकल्प की चेकिंग आवश्यक है। भले वाचा और कर्मणा भी है लेकिन मन्सा शक्ति पावरफुल होने से वाचा कर्मणा में फर्क पड़ जायेगा। तो बापदादा आज मन्सा संकल्प के तरफ अटेन्शन खिंचवा रहे हैं, जो निमित्त महारथी हैं अब मन्सा शक्ति के ऊपर अटेन्शन दो। वाणी और कर्म तो आटोमेटिकली ठीक हो ही जायेगा। तो बापदादा आज मन्सा संकल्प के लिए इशारा दे रहे हैं क्योंकि वेस्ट थॉट्स जो आवश्यक नहीं है वह भी टाइम ले लेते हैं। वह समय बचाना है। हो सकता है? हो सकता है हाथ उठाओ। अच्छा। उमंग-उत्साह वाले तो बहुत हो इसकी शाबास। अभी उमंग-उत्साह को कर्म तक लाओ। इसमें भी पास हो जायेंगे क्योंकि बाप को साथ रखेंगे ना, तो बाप का साथ होने से आटोमेटिकली व्यर्थ समाप्त हो जायेगा।

तो आज बापदादा वेस्ट थॉट्स, उसके ऊपर अटेन्शन खिंचवा रहे हैं क्योंकि इसमें टाइम बहुत वेस्ट जाता है। टाइम को तीव्र पुरुषार्थ में लगाना है। तो आज बापदादा व्यर्थ के ऊपर अटेन्शन खींच रहे हैं क्योंकि बच्चे कहते हैं खराब संकल्प तो नहीं है ना! यह छोटे-छोटे व्यर्थ संकल्प हैं लेकिन कभी भी धोखा समय पर दे सकते हैं इसलिए व्यर्थ को भी कम करो। तो मन्सा वाचा और कर्मणा, कर्म (सम्बन्ध-सम्पर्क) सबमें चेक करो कि वेस्ट कितना है बेस्ट कितना है? क्योंकि इस शिव रात्रि पर बाप को कोई सौगात तो देंगे ना! देंगे? हाथ उठाओ। तो बापदादा यही सौगात चाहते हैं कि व्यर्थ को समाप्त करो। अटेन्शन दो। बुराई के ऊपर तो अटेन्शन है लेकिन व्यर्थ के ऊपर भी अटेन्शन देना है क्योंकि व्यर्थ में समय बहुत वेस्ट जाता है। तो आज के दिन शिव जयन्ती के उपलक्ष्य में व्यर्थ के ऊपर अटेन्शन देने का होमवर्क बापदादा दे रहा है। पसन्द है ना! पसन्द है? हाथ उठाओ। पसन्द है तो सब पास हो जायेंगे। पसन्द है तो पसन्द चीज़ तो दिल से की जाती है। तो मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। मेहनत तो नहीं लगती है ना। अरे, अटेन्शन से मेहनत कम हो जाती है। करके देखो, सब पास होंगे, रिजल्ट पूछेंगे ना एक मास के बाद, तो मैजारिटी पास हों। हो सकता है ना? हो सकता है, हाथ उठाओ। अच्छा। तो यह तो सभी हाथ उठा रहे हैं। तो बापदादा कहते हैं वाह बच्चे वाह! लक्ष्य से लक्षण स्वत: और सहज हो जायेंगे। अच्छा -

एक-एक बच्चे को बापदादा तीव्र पुरुषार्थ का इनाम देगा। पसन्द है ना! अच्छा। आज के दिन की शिव रात्रि का दिन है ना! तो आज के दिन की विशेष मुबारक है और दिल का प्यार है। आज बापदादा ने देखा डबल फारेनर्स बहुत हैं। उठो देखें कितने हैं? देखो, वाह! वाह भाई वाह! बापदादा खुश है। अटेन्शन अच्छा है। बापदादा दिल की दुआयें दे रहे हैं। भारतवासियों को भी हैं। आजकल विदेशियों की सीजन है ना! तो बहुत तरफ से आये हैं, बापदादा देख रहे हैं कि काफी देशों से पहुंच गये हैं। (80 देशों से 1200 डबल विदेशी आये है) सब डबल खुश हैं ना! तन से मन से दोनों से? अच्छा है। सेवा के तरफ भी अटेन्शन है और जितना बढ़ा सको सेवा उतनी बढ़ाते जाओ क्योंकि अचानक कुछ भी हो सकता है इसलिए सेवा को बढ़ाते जाओ क्योंकि अपना राज्य आना है ना। तो अपने राज्य में तो राज्य करेंगे ना। जितना हो सके उतना आत्माओं को बाप का परिचय तो दे दो बाप आया और चला जाए और बच्चों को पता ही नहीं पड़े, तो जितना हो सके उतना सन्देश जरूर दो। फिर पश्चाताप तो करेंगे कि बाप आया हमको सुनाया भी गया, लेकिन हम नहीं चले। आप अपना सन्देश देने का काम बढ़ाते चलो, कोई उल्हना नहीं दे हम तो पास में रहता था, हम तो एक गली में रहते थे तो भी हमको पता नहीं पड़ा। तो अच्छा है, फारेनर्स की रिजल्ट भी अच्छी है। मधुबन से प्यार है। और आपको पहले भी बताया कि आपके सेवा के बाद बापदादा विश्व सेवाधारी प्रसिद्ध हुए। आप भी जहाँ कोई रहा हुआ है, पहले भी सुनाया था, जहाँ तक हो सके सन्देश तो मिले कि हमारा बाप

आया। चले नहीं चले वह उन्हों के ऊपर है लेकिन आपकी तरफ से परिचय तो मिले, फिर पश्चाताप करेंगे लेकिन मालूम तो पड़े ना! फिर भी रिजल्ट अच्छी है। बहुत अच्छा। जहाँ से भी आये हो मेहनत करके, तो मेहनत का फल आपको मिलेगा भी और जमा भी हुआ। बहुत अच्छा बैठ जाओ। डबल फारेनर्स देखो टाइटल क्या है? डबल फारेनर्स कभी भूलते नहीं होंगे, हम डबल विदेशी हैं।

सेवा का टर्न राजस्थान ज़ोन का है, 5000 आये हैं :- बापदादा ने देखा कि हर एक ज़ोन की ड्युटी होने के कारण अच्छी रिजल्ट है, वह ज़ोन खास अटेन्शन देता है। मैजारिटी रिजल्ट अच्छी है। आप क्या समझती हो? रिजल्ट अच्छी है ना। बहुत अच्छा यह ज़ोन ज़ोन को मिलता है ना तो अच्छा सेवा में सहयोगी भी है और ज़ोन को भी विशेष मिलता है। दादियों का भी अटेन्शन ज़ोन पर पड़ता है। यह अच्छा लगता है ना, हाथ उठाओ।

पहली बार बहुत आये हैं:- तो पहली बार आने वालों को पहला नम्बर लेना है क्योंकि इतना समय जो मिस किया, वह समय को पूरा करना है इसलिए तीव्र पुरुषार्थी बनना, ढीले ढाले नहीं तीव्र पुरुषार्थी। मंजूर है? तीव्र पुरुषार्थी।

दादी रतनमोहिनी जी को डॉक्टरेट की डिग्री मिली है:- यह भी संस्था का शान है, तो ब्रह्माकुमारीज़ सब कुछ कर सकती हैं। नहीं तो सोचते हैं पता नहीं ब्रह्माकुमारियां क्या करती हैं इससे समझते हैं तो वह आलराउन्ड सब तरफ पहुंच सकती हैं। अच्छा।

(दादी जानकी - वन्डरफुल बाबा कमाल है दिलों को सारा खींच लेता है।) दिलाराम है ना। दिलाराम के पास दिल पहुंच गई। (सभी को कैसे पता पड़ेगा) पता पड़ जायेगा। जो रहे हुए हैं उनको पता पड़ता जाता है। अभी उमंग उत्साह से रहे हुए स्थान को पहुंचाओ सभी को। आप कराओ। बाबा करा रहा है, बाप अभी भी कराता रहेगा। कहाँ जायेंगे? (शरीर की खिटपिट होती रहती है) कोई बात नहीं है। बच्चों को तो आगे बढ़ाने के निमित्त है क्योंकि बच्चों को ही सामना करना पड़ता है। फिर भी बच्चों द्वारा ही करना पड़ता है।

मोहिनी बहन ने बापदादा को बधाई दी:- आपको लाख गुणा मुबारक हो।

रमेश भाई ने कार्ड दिया:- आपको हजार गुणा, पदमगुणा मुबारक हो।

बृजमोहन भाई से:- अटेन्शन है और आगे बढ़ते चलो।

भूपाल भाई से:- ठीक है बहुत अच्छा।

बापदादा को सभी के भेजे हुए कार्ड दिखाये:- (रशिया और नलिनी बहन का कार्ड दिखाया) उनको कहना बापदादा ने देखा। उसको फल या टोली भेजना।

विदेश की बड़ी बहिनों से:- सभी महारथी इकट्ठे हो गये हैं देश के भी और विदेश के भी। यह संगठन अच्छा लगता है ना। (सभी देश मिलकर एक साथ कोई सेवा करें) पुरुषार्थ भी कर रहे हैं, सेवा भी कर रहे हैं और सफलता भी है। बापदादा खुश है चाहे देश वाले चाहे विदेश वाले। मेहनत कर रहे हैं और मेहनत का फल भी निकल रहा है इसलिए मुबारक हो, मुबारक हो। निमित्त तो आप लोग हो ना। बापदादा तो आपको बल देता लेकिन दुनिया के आगे तो बच्चों को ही करना है।

(कोयम्बतूर से डाक्टर आये हैं) अभी डबल डाक्टर। सिंगल नहीं डबल डाक्टर बनना है। पक्का हो गया। पक्का। अच्छा है आगे बढ़ते जाओ। सेवा में आगे बढ़ते जाओ। आपके पास तो बना बनाया सन्देश देने का साधन है, बहुत सेवा करो। करेंगे। अच्छा है।

बापदादा ने अपने हस्तों से शिवध्वज फहराया:- सभी की दिल एक ही शब्द बोल रही है वाह शिव जयन्ती वाह! वाह शिवबाबा वाह!

''जीवन के हर दिन होली (पवित्र) बन पवित्रता के वायब्रेशन चारों ओर फैलाना, बीती को बीती कर सफलता के वरदान को स्वरूप में लाना''

सर्व होली बच्चों को होली की मुबारक हो। आप एक-एक होली बच्चा आज बापदादा के साथ होली मनाने आये हैं तो बापदादा भी सर्व होली बच्चों को होली की मुबारक दे रहे हैं। एक-एक बच्चा कितना प्यारा है यह बाप और बच्चे जानते हैं। होलिएस्ट बाप हर बच्चे को अति स्नेह से होली की मुबारक दे रहे हैं। सर्व बच्चे होलिएस्ट बाप के होली बच्चे हैं। आज के दिन हर एक बच्चा अपने होली बनने की, होली बनाने की स्थिति को जानते हैं। बाप भी एक-एक बच्चे को कहाँ तक मन्सा-वाचा-कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क में होली बने हो, पवित्र बने हो, वह बाप भी जानते आप भी जानते हो क्योंकि बापदादा को होलिएस्ट बच्चे बहुत प्यारे हैं। तो आज हर एक बच्चा होलिएस्ट बनने की मुबारक स्वीकार करे। हर होली बच्चा नम्बरवार है लेकिन बापदादा के प्यार का अधिकारी है। तो बापदादा चारों ओर के बच्चों को चाहे देश चाहे विदेश एक-एक बच्चे को बहुत दिल व जान, सिक व प्रेम से होली बनने की मुबारक दे रहे हैं। मुबारक हो, मुबारक हो।

यह भी दिन बनाये भक्ति वालों ने हैं लेकिन हर दिन को महत्व दिया है। मनाते आप भी हो, भक्त भी हैं, साधारण बच्चे भी हैं लेकिन हर बच्चे अपने-अपने रूप से मनाते आते हैं। बच्चे तो अमृतवेले से लेके बाप को मुबारक हो, मुबारक हो की लाइन्स लगा देते हैं। चारों ओर से चाहे देश से, चाहे विदेश से, चाहे गांव से, हर बच्चा दिल से बाप को और आप सबको बहुत-बहुत मुबारक देते हैं और बापदादा बच्चों को मुबारक का रेसपान्ड बहुत-बहुत स्नेह से देते हैं।

आज अमृतवेले चारों ओर से होली मुबारक, होली मुबारक के बच्चों के दिल के गीत बाप ने सुने हैं। बाप भी अभी सम्मुख आप एक-एक बच्चे को कितने भी हैं, एकदम लास्ट बच्चे को भी मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो, दे रहे हैं। सबके चेहरे इस समय बाप के स्नेह में लगन में मगन दिखाई दे रहे हैं। बापदादा चारों ओर के बच्चों को नयनों की दृष्टि देते हुए यही मिलन मना रहे हैं बच्चे सदा हर दिन इसी मिलन के खुशी और मौज़ में आगे बढ़ते चलो। जैसे दिन का नाम है होली, ऐसे जीवन के हर दिन होली बन अर्थात् पवित्र बन पवित्रता के वायब्रेशन चारों ओर फैलाते रहो।

बापदादा एक बात पर खुश है, क्या देखा? कि हर बच्चा बापदादा को मुबारक दे रहे हैं और भिन्न-भिन्न स्थान की मुबारकें, मुबारकों की झोली भर गई। यह मुबारक सदा याद रहे, होली मुबारक है। आज बापदादा ने चारों ओर के बच्चों को अमृतवेले से लेके दिल से मुबारकें दी। हर बच्चा हर सब्जेक्ट में आगे बढ़ते चलो, बापदादा हर बच्चे के साथी हैं। अभी आज के दिन बापदादा भी आये हुए सम्मुख एक-एक बच्चे को दिल की दुआओं के साथ मुबारक दे रहे हैं। मुबारक हो, मुबारक हो। होली, जो सेकण्ड बीता वह सेकण्ड के लिए क्या कहेंगे? होली, हो लिया। हर एक बच्चा अमृतवेले से लेके अपने-अपने समय प्रमाण मुबारकों के गीत, दिल के गीत, मुख से गाते नहीं लेकिन दिल में मुबारकों के गीत बापदादा के कानों में सुनाई दिये। तो बापदादा भी एक-एक बच्चे को सम्मुख मुबारक का रेसपान्ड दे रहे हैं, हर बच्चे को दिल की दुआओं के साथ, दिल के प्यार के साथ मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

आज के दिन से रोज़ अमृतवेले अपने पुरुषार्थ प्रमाण बाप की दुआयें स्वीकार करना। बाप की दुआयें क्या हैं? बापदादा हर बच्चे को तीव्र पुरुषार्थी स्वरूप में देखने चाहते हैं। कोई भी बातें आयें, बातों का काम है आना लेकिन

आप बच्चों का काम है बाप के दिल की दुआयें लेना। रोज़ अमृतवेले अपने को बाप की दुआयें स्वीकार करना। सारा दिन ऐसे अनुभव करो कि बापदादा हमारे रक्षक बन साथ में है और बाप के साथ का अर्थ क्या है? बाप जो कहे, अमृतवेले जो मुरली सुनते हो उसमें याद प्यार के साथ दुआयें हैं ही। तो रोज़ दुआयें लेते उड़ते चलो और उड़ाते चलो। तो होली मनाना अर्थात् बीती को और वर्तमान को सदा सफलता स्वरूप बनाना है। सफलता स्वरूप है, सफलता हमारे जन्म का वरदान है। उस स्मृति से दिन को बार-बार याद करो, बापदादा का वरदान है - सफलता हर बच्चे के साथ है क्योंकि बापदादा साथ है तो सफलता सदा एक-एक बच्चे के साथ है, सिर्फ उसको प्रैक्टिकल में लाना है। है ही सफलता स्वरूप। स्वरूप ही सफलता है। तो आज के दिन यही वरदान स्मृति में रखना कि सफलता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। यह स्मृति असफलता की बात को भी सफल बना देगी। तो आज के दिन को सदा सफलता स्वरूप हूँ, यह आज के दिन का बापदादा का वरदान सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है, यह सदा स्मृति में रखना।

तो आज होली अर्थात् बीती सो बीती। होली अर्थात् बीती। तो जो भी कुछ किया उसको आज बीती सो बीती कर आगे के लिए सफलता मेरा जन्म अधिकार है, अमृतवेले रोज़ इस वरदान को स्मृति में रख सारा दिन चेक करना और सफलता स्वरूप बनना। अभी तो बहुत नॉलेजफुल बने हो, दुनिया को पैगाम देते हो और बापदादा भी हर बच्चे को यह वरदान देते हैं कि सफलता आपका जन्म का अधिकार है। तो अमृतवेले का सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है, इसको रोज़ स्मृति में रखना और प्रैक्टिकल में अगर कोई भी बात आवे तो सफलता के वरदान को याद करना और प्रैक्टिकल में लाना।

आज के होली के दिन का विशेष वरदान है - बाप समान, ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न बनना ही है। फालो फादर। क्योंकि ब्रह्मा बाप साकार रूप में थे, अभी भी मददगार हैं इसलिए फालो ब्रह्मा बाप। सफलता मेरा जन्म अधिकार है। अधिकारी हो ना! अधिकारी हो? हाथ उठाओ। तो जहाँ सफलता अधिकार है वहाँ माया की क्या बड़ी बात है! माया के खेल देखते रहो, माया का काम है आना आपका काम क्या है? विजय प्राप्त करना। यह सदा याद रहे, सफलता के विजयी रत्न हूँ। हो सकता है ना! हो सकता है? सफलता के अधिकारी हैं ना! अच्छा।

आज की बहुत-बहुत-बहुत मुबारक हो। सब ठीक हैं। हाथ उठाओ। ऐसे ऐसे उठाओ। बहुत अच्छा लग रहा है। बापदादा भी बहुत-बहुत मुबारकों का टोकरा भरके दे रहे हैं। कुछ भी हो, याद रखना बाप की सौगात छोड़ना नहीं। अच्छा।

चारों ओर के देश विदेश के बच्चों को आज के दिन की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

सेवा का टर्न दिल्ली और आगरा का है:-(इस टर्न में टोटल 25 हजार आये हैं, 14 हजार दिल्ली आगरा के हैं) बहुत अच्छा। देहली को यही वरदान है, ड्रामानुसार कि हमारे राज्य में भी दिल्ली विशेष स्थान रहेगा। जहाँ लक्ष्मी नारायण का राज्य होगा। फॉरेन वाले क्या सोच रहे हैं? फॉरेन वाले यह सोच रहे हैं कि हम भी दिल्ली के होंगे। कहाँ भी हो लेकिन दिल्ली तो मुख्य रहेगा तो आना जाना तो होगा ना। फंक्शन में तो आयेंगे ना! मिलते रहेंगे। डांस करते रहेंगे। मजे से राज्य करते रहेंगे। अभी संगमयुग का साथ वहाँ भी रहेगा। जितने नजदीक अवस्था अनुसार अभी होंगे उतना ही वहाँ भी परिवार के नजदीक होंगे। फॉरेन वाले कहाँ आयेंगे? दिल्ली में आयेंगे। सब मिल करके बहुत अच्छा राज्य करेंगे। अच्छा।

डबल विदेशी:- डबल विदेशियों ने तो आधा हाल भर दिया है। अच्छा है। अभी भारत वालों जैसा विदेशी भी हर देश से आते अपना लाभ उठाते हैं। अच्छा है। भले आये, और जाके औरों को भी साथ लायेंगे। अच्छा।

अच्छा - एक-एक बच्चे को बापदादा दिल का प्यार देते हुए गुडनाइट कर रहे हैं। अच्छा है, डबल फारेनर्स ने उन्नति अच्छी की है। पुरुषार्थ में भी कहाँ-कहाँ बहुत अच्छे अटेन्शन में हैं, बापदादा उन बच्चों को खास एक-एक को याद और प्यार दे रहे हैं।

दादियां:- सभी अच्छा सम्भाल रहे हैं। निमित्त बनके कार्य कर रहे हैं, अच्छा कर रहे हैं, करते रहेंगे।

मोहिनी बहन:- एक-एक को वरदान है। वरदान चला रहा है और पहुंच जायेंगे साथ में। राज्य करेंगे ना साथ में। आज सब तरफ की दादियां आई हैं।

रूकमणि दादी:- अभी भले नहीं देखती हो लेकिन बुद्धि सालिम है इसीलिए अभी भी जो कुछ चलता है वह जानती भी हो, चलती भी हो, चलाती भी हो। ठीक है। मुबारक हो। अच्छा।

तीनों बड़े भाईयों से:- त्रिमूर्ति सारे यज्ञ का ध्यान रखते हैं। यह त्रिमूर्ति यज्ञ की रेख-देख करने के निमित्त बने हुए हैं और साथी भी हैं, यह भी हैं। साथी भी बहुत अच्छे हैं। जैसे चला रहे हो वह भी ठीक है और एक दो के नजदीक आओ। संस्कार में नजदीक आओ। वैसे नजदीक हो लेकिन संस्कार मिलाने में यह भी ध्यान रखो। ऐसे लगे तीन नहीं हैं लेकिन एक हैं। साथी तो और भी बहुत अच्छे हैं। बापदादा के पास कोई रिपोर्ट नहीं है, अच्छे हैं लेकिन और भी अच्छा बनाना है। यज्ञ की कारोबार एकदम अच्छी चल रही है, कोई बात नहीं है, अटेन्शन दे रहे हैं और आगे भी देते रहेंगे। हर एक ने जो ड्युटी ली है, वह अच्छी सम्भाल रहे हैं। बापदादा खुश है।

हरिद्वार में सन्त सम्मेलन होने वाला है, आपकी कोई प्रेरणा हो:- कभी भी ऐसे धार्मिक स्थान पर जाते हैं तो उन्हों के प्रति शुभ भावना रख उनकी महिमा भी करनी चाहिए, जो वह समझें यह हमारे को रिगार्ड देते हैं। अच्छा है।

रमेश भाई ने बहुतों की याद दी:- सभी को कहना बापदादा ने याद दिया है।

गुजरात में सरला दीदी का अमृत महोत्सव सभी ने खूब धूमधाम से मनाया है:- अच्छा है। जन्म से ही वरदानी रही हो। अभी वरदान तो आपके गले का हार हो गये हैं इसलिए जैसे निमित्त बनके चल रहे हैं वैसे और भी आगे बढ़ाते जाओ, बढ़ाते जाओ, बढ़ाते जाओ। अच्छा।

अमर बहन:- यह भी अच्छा साथ दे रही है। अच्छा है, दोनों ही अच्छे हैं।

अच्छा - एक-एक को बापदादा याद प्यार विशेष दे रहे हैं। स्टेज पर आयेंगे तो घमसान हो जायेगा लेकिन बापदादा दूर से ही एक-एक को दृष्टि और प्यार दे रहा है।

(बाबा अगली सीजन में आयेंगे ना)

संगमयुग है साथ रहने का, साथ चलने का, साथ राज्य करने का। बाप चाहे साकार में साथ नहीं रहेंगे (शिवबाबा सतयुगी राज्य में साथ नहीं रहेंगे) लेकिन साथ में आपके राज्य की प्रेरणायें देते रहेंगे। (रथ को भी ठीक रखना) रथ को ठीक रखेंगे। अच्छा।

रुकमणी बहन ने दीदी निर्मलशान्ता जी की याद दी, आज दीदी का पुण्य स्मृति दिवस है :- जहाँ भी है, बच्ची खुश है आप भी खुश रहो। (बाबा पटना सेवा पर जा रही हूँ) अच्छा है आगे बढ़ती रहो।

''द फ्युचर आफ पावर के प्रोग्राम भारत के 35 शहरों में हुए हैं, इस उपलक्ष्य में बहुत सुन्दर केक बनाया है, जिसे बापदादा और वरिष्ठ दादियां वा भाईयों ने काटा।''

''किसी भी वायुमण्डल को देखते बाप के स्नेह और सहयोग से आगे बढ़ते चलो, हर एक की विशेषता देखो, स्वयं भी तीव्र पुरुषार्थ के उमंग-उत्साह में रहो और साथियों को भी उमंग-उल्हास दिलाओ''

ओम् शान्ति। आज बापदादा हर बच्चे में बापदादा से दिल का कितना प्यार है, वह प्यार की सूरतें हर एक बच्चे की शक्ल से देख रहे हैं। जितना बच्चों का प्यार बापदादा से है उससे ज्यादा हर बच्चे के लिए बाप के दिल में प्यार है। यह दिल का प्यार सभी बच्चों को यथा शक्ति चला रहा है, बापदादा देख रहे हैं हर बच्चे के अन्दर बाप से, बापदादा दोनों से दिल में बहुत-बहुत प्यार है। बापदादा को भी हर बच्चे के प्रति दिल में प्यार है। हर एक के दिल में बाप की यादप्यार समाई हुई है, यह अलौकिक प्यार हर एक को चला रहा है। चाहे कहाँ भी कितने भी बच्चे हैं लेकिन बापदादा के दिल का प्यार बच्चों को चला रहा है। हर एक बच्चा बापदादा के प्यार में, परिवार के प्यार में नम्बरवार चल रहे हैं। यह अलौकिक प्यार सारे कल्प में अब संगमयुग में ही अनुभव करते हो। बापदादा भी हर बच्चे के दिल का प्यार देखकर हर एक बच्चे के प्रति दिल की दुआयें देते हैं, बच्चे सदा दिल के दिलवर द्वारा दिल का प्यार लेते हुए आगे बढ़ते चलो। बापदादा के दिल का प्यार, परिवार के दिल का प्यार हर एक आत्मा को चला रहा है और चलाता रहेगा। बापदादा हर एक बच्चे के मस्तक की रेखाओं द्वारा जानते हैं कि बाप का प्यार कैसे हर एक बच्चे को चला रहा है। अभी बापदादा हर एक बच्चे को महावीर बन चलने की दुआयें दे रहे हैं। कभी भी थकना नहीं, घबराना नहीं, बाप को हर बच्चा अति प्यारा है। यह प्यार ही आगे बढ़ा रहा है और आगे बढ़ाता रहेगा। ऐसे प्रभु प्यार, दिल का प्यार हर एक नम्बरवार अनुभव कर चल रहा है और हर एक बच्चे के दिल में उमंग-उत्साह है लेकिन नम्बरवार कि बाप के समान बनना ही है। सबको उमंग है ना! बाप समान बनना है ना! बन रहे हैं और आगे भी बनेंगे। हाथ उठाओ। बाप का भी दिल से प्यार है, सदा बच्चों के गुण गाते हैं वाह बच्चे वाह! बढ़ रहे हैं और बढ़ते रहो। देखो, सारे विश्व में बापदादा के सम्बन्ध का प्रैक्टिकल में अनुभव करने वाले कितने और कौन हैं! तो आप सभी प्रत्यक्ष प्रमाण हो, दिल से प्यार है और प्यार की पालना से आगे से आगे बढ़ रहे हैं। सभी प्यार की पालना से आगे बढ़ रहे हैं या कोई बीच में विघ्न आता है तो रूकते तो नहीं हैं? बापदादा ने देखा आगे बढ़ने का संकल्प काफी बच्चों में है, चाहे कितनी भी छोटी-मोटी रूकावटें आयें लेकिन बापदादा ने देखा मैजारिटी बच्चे बाप के प्यार और नॉलेज के आधार से अच्छे आगे बढ़ रहे हैं और बढ़ते रहेंगे। बापदादा आप बच्चों को देखकर एक बात में बहुत खुश होते, वह कौन सी बात? चाहे बातें कितनी भी आयें लेकिन निर्भय बन मैजारिटी आगे बढ़ रहे हैं। बापदादा बच्चों का लक्ष्य और लक्षण देख खुश है इसलिए कभी भी किसी भी वायुमण्डल को देख उसके प्रभाव में न आकर बाप के स्नेह और सहयोग से काफी आगे बढ़ भी रहे हैं और बढ़ते रहना। एक दो को देख उनकी विशेषता को देखो, दूसरी बातों को नहीं देखो। आगे बढ़ना ही है, बोलो सबको यह लक्ष्य है आगे बढ़ना ही है! वह हाथ उठाओ। एक दो की कमजोरी की बातें सुनते भी जैसे नहीं सुनो। खुद को भी आगे बढ़ाओ और साथियों को भी आगे बढ़ाते चलो। बापदादा ऐसे बच्चे भी देख रहे हैं, अच्छा पुरुषार्थ कर रहे हैं लेकिन तीव्र पुरुषार्थ की लहर सदा अपने में लाते हुए औरों को भी तीव्र पुरुषार्थी की लहर में लाओ। उमंग-उत्साह में लाओ, सहयोगी बनो। पुरुषार्थहीन के वायुमण्डल में नहीं आकर उन्हों को भी उमंग उत्साह में लाओ। बीच-बीच में किसी-किसी आत्माओं को पुरुषार्थ में थकावट अनुभव होती है, बापदादा देखते हैं लेकिन स्वयं पुरुषार्थ में तीव्र रहने वाले औरों को भी पुरुषार्थ में आगे बढ़ाओ। वायुमण्डल दिनचर्या का ऐसे बनाओ जो सभी पुरुषार्थ के उमंग-उत्साह से बढ़ते भी चलें, बढ़ाते भी चलें क्योंकि एक दो के साथी हो ना! तो सबके प्रति शुभ भावना के आधार से बढ़ते चलो, उमंग-उल्हास अपने अनुभव का सुनाते हुए एक दो के सहयोगी बनो।

बापदादा ने देखा मैजारिटी पुरुषार्थ की लहर में ठीक चल रहे हैं लेकिन पुरुषार्थ में ढीले साथी होने के कारण थोड़ा-थोड़ा असर पड़ जाता है, वह अटेन्शन दो। हमें नम्बरवन या नम्बर आठ तक आना ही है। सबको उमंग है, आठ के अन्दर रहेंगे ना कि पीछे जायेंगे। जो समझते हैं हम विजयी बनेंगे, हैं और बनेंगे भी। वह हाथ उठाओ। हाथ तो सभी बहुत अच्छा उठाते हैं, उसका शुक्रिया हो लेकिन हाथ सदा उठाते रहना, कभी-कभी नहीं। वायुमण्डल क्या भी बनें लेकिन आप अपने वायुमण्डल से वायुमण्डल को परिवर्तन करो। वायुमण्डल में आओ नहीं, आगे बढ़ो

और आगे बढ़ाते चलो। एक दो के साथी हैं ना! तो सदा देना अर्थात् आगे बढ़ाना। तो आगे बढ़ते चलो। अब हर एक बच्चा किस लक्ष्य में है! तीव्र पुरुषार्थी। ढीला पुरुषार्थी नहीं। ठीक हो जायेगा, ठीक हो जायेगा, यह नहीं सोचो। ठीक होना ही है क्योंकि बाप से प्यार है ना। बाप से प्यार है तो बाप को किससे प्यार है? तीव्र पुरुषार्थी बच्चों से। तो आप क्या बनेंगे? तीव्र पुरुषार्थी, जो समझते हैं तीव्र पुरुषार्थी बन औरों के भी सहयोगी बनेंगे, वह हाथ उठाओ। हाथ उठाने में तो होशियार हैं, बापदादा खुश हैं। हिम्मत तो रखी ना! तो हिम्मते बच्चे मददे खुदा। जरूर मदद मिलेगी। सिर्फ इच्छा रखो बस बनना ही है, करना ही है, पुरुषार्थहीन नहीं, पुरुषार्थ। बापदादा खुश होते हैं, कोई कोई बच्चा अभी भी देखते हैं पुरुषार्थ में बातें आते थोड़ा कमजोर बन जाते लेकिन नहीं, बहादुर बनो, बहादुर बनाओ। कम से कम जो रेग्युलर आने वाले हैं उन्हों को तीव्र पुरुषार्थ का लक्ष्य है, ऐसे नहीं है लक्ष्य नहीं है, है लक्ष्य लेकिन बीच में कोई बातें आने से थोड़ा पुरुषार्थ की बातें सोचते हैं लेकिन करने में थोड़े ढीले पड़ जाते हैं।

तो रोज़ अमृतवेले चेक करो कि मेरे पुरुषार्थ की गति तीव्र है या चल रहे हैं, पहुंच ही जायेंगे, हो ही जायेगा, ऐसे संकल्प तो नहीं रखते! तीव्र पुरुषार्थी बनो। पुरुषार्थी तो हैं लेकिन चेक करो तीव्र पुरुषार्थी हैं? बापदादा को प्रिय कौन लगते हैं? तीव्र पुरुषार्थी। तो हर एक बच्चे को क्या बनना है? तीव्र पुरुषार्थी बनना है? हाथ उठाओ। बनना है, बनना है या बनके चल रहे हो? यह लक्ष्य कभी भी नहीं छोड़ना, तीव्र पुरुषार्थी रहना ही है, औरों को भी साथ देना है। यह लक्ष्य है, जिसके दिल में यह लक्ष्य है वह हाथ उठाओ। अच्छा हाथ तो सभी उठाते हैं। चलो। थोड़ा ठण्डा है तो तीव्र कर देना क्योंकि दिनप्रतिदिन माया भी अपना काम करती रहती है। लेकिन आप सब बच्चे कौन हो? आपका टाइटल क्या है? मायाजीत। कौन मायाजीत बनने वाले हैं, वह हाथ उठाओ। सभी ने हाथ उठाया है। बापदादा को खुशी होती है कि हिम्मत तो है, हिम्मते बच्चे मददे बाप तो है ही। हिम्मत नहीं हारना। बापदादा का सहयोग पहले है। हिम्मत हारा तो सब गया। हिम्मत है तो हिम्मते बच्चे मददे बाप है ही। तो ठीक है! हिम्मत वाले हो, वह हाथ उठाओ। कई तो दो-दो उठा रहे हैं। अच्छा है, हाथ उठाना तो सहज है लेकिन पुरुषार्थ का हाथ भी उठाना। बापदादा खुश होते हैं जब बच्चों में उमंग उल्हास की लहर होती है क्योंकि हर एक बच्चे का लक्ष्य है नम्बरवन होने का। है ना! नम्बर टू तो नहीं बनना है ना! जो समझते हैं नहीं नम्बरवन होना ही है, वह हाथ उठाओ। हाथ तो सभी उठा रहे हैं। हाथ तो अच्छा उठा रहे हैं। बापदादा खुश है आपका हाथ उठाना देख खुश है लेकिन खुश करते रहना। अच्छा है, आज टर्न किसका है?

इन्दौर और भोपाल ज़ोन की सेवा का टर्न है:- (10 हजार हैं) आधा क्लास तो यही है। इस टर्न में 26 हजार हैं। सबसे बड़ा ग्रुप है) तो सक्सेस है। मुबारक हो। जो टर्न वाले हैं वह हाथ उठाओ। अच्छा है। हिम्मते बच्चे मददे बाप है। अच्छा है। हमेशा हिम्मत हर कार्य में रखना चाहिए। हम नहीं करेंगे तो कौन करेगा! हम ही तो हैं, ऐसे हैं ना! हम ही तो हैं और बापदादा खुश होते हैं कि हिम्मत से मदद भी मिल जाती है। अच्छा है। मुबारक हो, मुबारक हो।

डबल विदेशी भाई बहिनें:- बापदादा सभी बच्चों पर तो खुश है ही लेकिन फारेनर्स ने अच्छा सभा का भाग्य स्पष्ट किया है। डबल फारेनर्स को बाबा देख खुश है कि कोई भी ऐसा टर्न नहीं हुआ जिसमें फारेनर्स हाथ नहीं उठायें। और अच्छी संख्या में आते हैं इसलिए मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा।

मधुबन निवासियों से:- अच्छा है, मधुबन वालों का निमन्त्रण होता है ना, इसलिए मधुबन वाले भी अच्छी सेवा कर रहे हैं। सेवा की रिजल्ट अच्छी है। बापदादा खुश है कि मधुबन निवासी अच्छा ध्यान हर एक डिपार्टमेंट में दे रहे हैं इसलिए मुबारक हो, मुबारक हो मधुबन वालों को। अच्छा।

पहली बार बहुत आये हैं:- आधा क्लास पहली बारी आये हैं। अच्छी तरह से हाथ उठाओ। अच्छा।

चारों ओर के विशेष भाई बहिनें, जो सदा डायरेक्शन पर अटल हैं, ऐसे बच्चे भी बापदादा के पास नोट हैं। जो हर कार्य में आगे बढ़ते हैं तो बापदादा नोट करते हैं, भिन्न-भिन्न कार्य में वही आत्मायें हैं जो हाथ उठाते हैं। अच्छा है। ऐसे पुरुषार्थी बच्चे भी बापदादा देखते हैं, उन्हों को विशेष बहुत-बहुत-बहुत दिल से यादप्यार स्वीकार हो।

दादी जानकी जी ने खास याद दी है, तबियत ठीक नहीं हैं, कमरे में सुन रही हैं:- जनक बच्ची को विशेष यादप्यार

दे रहे हैं। आप सबकी तरफ से याद दे रहे हैं क्योंकि दिल तो उनकी यहाँ है, बाकी शरीर वहाँ है। सारी सभा उनके सामने हैं। अच्छे पुरुषार्थ में नम्बर ले रही है। तो बीमारी में भी नम्बरवन लिया है। नहीं तो कभी मिस करने वाली नहीं है। बापदादा बहुत-बहुत दिल से प्यार दे रहे हैं। आप सबको भी। (दादी जानकी कहती है बाबा ऐसा जादू कर दे जो मैं सम्मुख आ जाऊं) अभी उठना ठीक नहीं है। दर्द है ना।

मोहिनी बहन:- यह भी हिम्मत रखती है, मुबारक हो। बढ़ाता रहेगा।

ईशू दादी:- एवररेडी है। हर कार्य में हाँ जी, हाँ जी। अच्छा है। पार्ट अच्छा बजा रही है।

रूकमणी दादी:- ठीक है ना। अच्छी है, हिम्मत रखके इतना बढ़ी है। अच्छा है। सभी दिल्ली वालों को बहुत-बहुत मुबारक हो, हर कार्य में ध्यान रखते हैं, एवररेडी।

(निर्वैर भाई ने कहा मीटिंग के टाइम भी बापदादा को आना है, हमारी रिक्वेस्ट है) देखेंगे।

बृजमोहन भाई:- अच्छा चल रहा है, धीरे धीरे बढ़ेगा।

गामदेवी सेन्टर की गोल्डन जुबली है:- गामदेवी तो फाउण्डेशन है। अच्छा चलाया है, (सबने याद दी है) सबको बहुत बहुत यादप्यार देना।

(गाडली स्टुडियो में डबल विदेशियों की सेवाओं का समाचार देने का बनाया है) बहुत अच्छा।

कलकत्ता बांगुर सेवाकेन्द्र की सिल्वर जुबली है:- सभी की तरफ से बापदादा मुबारक दे रहे हैं। मुबारक हो।

(हाल के बाहर बगीचे में, कान्फ्रेन्स हाल में भी बहुत से भाई बहिनें बैठे हैं) चारों ओर के जहाँ जहाँ भी बच्चे देख रहे हैं, बापदादा भी आप सबको देख करके यादप्यार दे रहे हैं और गुडनाइट कर रहे हैं।

ओम् शान्ति 30-3-14 मधुबन

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा अपनी शुभ भावनाओं की सकाश द्वारा विश्व कल्याण की बेहद सेवा में उपस्थित देश विदेश की निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार हमारी मीठी मीठी दादी जानकी जी की तबियत का समाचार तो आप सबको मिला ही है। उन्हें राइट साइड के सोल्डर में थोड़ा क्रेक होने कारण काफी दर्द है, साथ-साथ रीढ़ के मणके में तथा बैठक में चोट होने कारण बैठने में दिक्कत हो रही है। दादी जी तो वैसे भी सदा योगयुक्त रहती हैं, लेकिन कल साकार बाबा की मुरली में था कि जब मेरे अनन्य बच्चों को कोई भी तकलीफ होती है तो बाबा रात को भी जागकर विशेष सकाश देते हैं, उन्हें एकस्ट्रा मदद करते हैं। तो हम सबकी दादी जी तो यज्ञ की शान हैं, सदा अथक बन सबको ज्ञान योग की पालना देती हैं। अभी दादी जी को 5-6 सप्ताह के लिए डाक्टर्स ने रेस्ट करने के लिए कहा है तो सभी सेवास्थानों पर भी विशेष मुरली क्लास के बाद 15 मिनट बाबा के सभी बच्चे पावरफुल योग अभ्यास द्वारा दादी जी को सकाश देने की सेवा करेंगे तो वायुमण्डल भी शक्तिशाली बनेगा और हमारी दादी जी भी जल्दी से जल्दी स्वस्थ हो जायेंगी। इन्हीं शुभ भावनाओं के साथ सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. हृदयमोहिनी

"दीपावली दिलाराम और दीपकों का यादगार है, हर एक बच्चे के दिल में दिलाराम समाया हुआ है"

हर एक मीठे-मीठे प्यारे-प्यारे दीपकों को बाप दिलाराम दीपराज की बहुत-बहुत मुबारक हो, दिल का स्नेह हो। हर एक के दिल में बापदादा समाया हुआ है। दीपराज आपके दिल में समाया हुआ है ना। है! हाथ उठाओ। सभी की दिल न बोलते हुए भी बोल रही है। क्या बोल रही है? दीपराज के दीप बच्चे हैं और सदा दीपक जगता रहेगा। ऐसे है ना! ऐसे है तो हाथ उठाओ। वाह दीपराज के दीपक वाह! बापदादा को हर एक अपने दीपक बच्चे को देख-देख बहुत खुशी हो रही है और दिल बार-बार वाह दीप बच्चे वाह कह रहे हैं। हर एक बच्चा या हर एक दीपक बापदादा को अति प्यारा है। अति प्यारा है क्यों दिल में और है क्या! दिलाराम बाप, तो बापदादा देख रहे हैं कि हर एक के दिल में दिलाराम ही दिखाई दे रहा है। यह दिलाराम का दिल में बसना दीपावली की याद दिलाती है। नाम ही दिलाराम है और दीपक है। हर एक के दिल में मेरा बाबा समाया हुआ है। जहाँ मेरा कहा ना तो मेरा कभी भूलता कम है। तो हर एक के दिल में कौन! मेरा बाबा। बाप के दिल में कौन? हर बच्चा। एक-एक बच्चे को देख बापदादा क्या सोचता है, वाह बच्चे वाह! भले नम्बरवार हैं लेकिन बाप के लिए हर बच्चा वाह वाह! है। हर बच्चे के दिल में बाप समाया हुआ है। आपसे कोई पूछे आपके दिल में कौन! तो क्या कहेंगे? ''मेरा बाबा'' क्योंकि मेरा भूलना मुश्किल है, याद करना सहज है। भूलना मुश्किल है। तो बापदादा देख रहे हैं मैजारिटी की दिल में बापदादा समाया हुआ है। बाप भी हर बच्चे को देख करके कहते वाह बच्चे वाह! यह सम्बन्ध संगमयुग में ही प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं। सबके दिल में देखो तो क्या दिखाई देता अभी? मेरा बाबा। और बापदादा के दिल में क्या है? हर बच्चा है। बाप के कितने भी सब बच्चे हो लेकिन दिल में समाया हुआ है। यह रूहानी नाता इस संगमयुग में ही अनुभव कर सकते हैं। हर बच्चा क्या कहेगा? मेरा बाबा। बाप क्या कहेगा? हर बच्चा मेरा। यह नाता प्रत्यक्ष रूप में अब संगम पर ही अनुभव करते।

बाबा भी एक-एक बच्चे को देखते कहते मेरा लाडला बच्चा। और बच्चे भी क्या कहते! मेरे लाडले बाबा। सब खुश हैं ना! खुशी की खुराक बाप द्वारा सदा मिलती रहती और बच्चे भी दिल में बाप का दिया हुआ वरदान सदा साथ रखते हैं और इस संगठन में प्रत्यक्ष रूप में बाप बच्चों को देख रहे हैं और बच्चे बाप को देख रहे हैं। बाप कहते वाह बच्चे, बच्चे कहते वाह बाबा और हर एक की सूरत में क्या है! परमात्म प्यार। तो सभी बच्चे बाप की मुबारकों से सदा सहज उड़ते रहते हैं। उड़ने वाले हैं ना! हाथ उठाओ। चलने वाले नहीं, उड़ने वाले। सभी उड़ने वाले हैं कि चलने वाले भी हैं? उड़ते रहते हैं क्योंकि यह समय ही उड़ने का है। सबके दिल में सदा यही गीत बजता रहता वाह बाबा वाह मैं! सबके दिल में कौन? बोलो। मेरा बाबा। तो सदा मेरापन स्वरूप में अनुभव में है कि काम काज में भूल जाता है? वैसे देखा जाए तो छोटी सी मेरी चीज़ भी भूलना मुश्किल है। मेरा बना दिया तो याद अमर है। तो हर एक की दिल क्या कहती? मेरा बाबा या ब्रह्माकुमारियों का बाबा। मेरा बाबा। और बापदादा भी हर बच्चे को देख खुश होते हैं, मेरे बच्चे।

तो आज दीपमाला का दिन है और बापदादा या आप सभी भी दीपराज और दीपकों को देख रहे हैं। दीपराज एक-एक दीपक को देख खुश होते और क्या गीत गाते? वाह बच्चे वाह! वाह बच्चे हो ना! जो वाह बच्चे हैं वह ताली बजाओ। तो आज हर एक के दिल में इस समय दिल में कौन है? मेरा बाबा। सबकी सूरत मुस्करा रही है क्योंकि वाह बाबा वाह है।

आज तो सम्मुख में बच्चे भी बाप को देख रहे हैं, बाप भी बच्चों को देख रहे हैं लेकिन चाहे दूर भी हो तो भी बाप तो दिल में समाया हुआ है। समाया हुआ है बाप दिल में? हाथ उठाओ। सबके दिल में बाबा है? और कुछ नहीं है। बाप के दिल में भी आप हर एक बच्चा है। बच्चों के बिना बाप रह नहीं सकता और बच्चे भी बाप के बिना रह नहीं सकते। यह संगमयुग की सौगात बाप और बच्चों का मिलन सारे कल्प में एक ही बार होता है। संगमयुग में बार-बार होता है लेकिन एक ही संगमयुग में होता है और जीवन कितनी सरल है। कोई हठयोग क्रिया नहीं करनी है, मेरा बाबा बस। और मेरा तो भूलना मुश्किल है। बाप को मेरा बना दिया तो भूलने की मेहनत खत्म। छोटी सी चीज़ भी मेरी होती है तो कितनी याद रहती है और बाप को भी हर बच्चा प्यारा है। ऐसे नहीं इतने बच्चे हैं मुझे बाबा याद करते हैं या नहीं। लेकिन नहीं, बाप विश्व का पिता है, उसमें भी मुख्य सम्बन्ध में कौन है? आप बच्चे हैं। एक-एक कितना प्यारा है। आप कहते हैं प्यारा बाबा, बाबा कहते हैं मेरे मीठे-मीठे, प्यारे-प्यारे बच्चे। एक-एक बच्चा बापदादा के दिल का प्यारा है।

तो आज भी दिल के प्यारे बाप से मिलने के लिए देखो कहाँ-कहाँ से पहुंच गये हैं। दीपमाला मना रहे हैं। बापदादा तो

चैतन्य दीपको को देख खुश होते हैं वाह बच्चे वाह! वाह वाह हो ना! वाह वाह हो? जो हैं वह हाथ उठाओ। सभी हैं? बापदादा के दिल में भी बच्चे हैं। कौन बाप के दिल में समा सकता है? वह तो आप सब जानते ही हो। लेकिन बाप के दिल में बच्चे, बच्चों के दिल में बाप है। यह संगम का संबंध सारे कल्प में नहीं होगा। अभी है वह भी इस जन्म का भाग्य है। तो दीवाली मना रहे हैं ना! हर एक दीपक दीपराज के लाडले हैं। चाहे कोई बच्चा अपने को क्या भी समझे लेकिन बाप को हर बच्चा दिल का प्यारा है। हर एक के दिल में क्या है? बच्चों के दिल में बाप, बाप के दिल में बच्चे।

डबल विदेशी 105 देशों से 2000 विदेशी आये हैं:- भारत तो है ही बापदादा आते ही भारत में हैं।

(बाबा का इतना प्यार मिल रहा है, हमको क्या रिटर्न करना है?) बच्चे जानते हैं हमको क्या करना है। सब विदेश के जो आये हैं, वह उठें। मुबारक हो। (सिन्धी भाई बहिनें) भले आये। स्थापना के स्थान का नाम तो है ना। बापदादा को खुशी है कि हर बच्चा चाहे सिन्धी है चाहे हिन्दी है लेकिन हर बच्चा खुश रहता है मैजारिटी। यह देख करके बाबा बहुत खुश होता है। खुशी कभी नहीं गंवाना। बात होती है लेकिन बात हमारी खुशी क्यों ले जाये। खुशी हर एक की अपनी चीज़ है वह कभी नहीं जानी चाहिए। बातें आती हैं वह भी पेपर आता है। तो जो बच्चे अच्छे पुरुषार्थी हैं वह पेपर मे सदा पास होते हैं उनके लिए पेपर कोई बड़ी बात नहीं। हैं ही रेडी। ऐसे रेडी रहने वाले की निशानी है कि उनकी शक्ल पर सदा खुशी की लहर दिखाई देती है। कितनी भी बातें हो जाएं क्योंकि डबल संबंध में रहते हैं लौकिक में भी, अलौकिक में भी लेकिन जो सदा खुश रहते हैं वह आगे से आगे कदम बढ़ाते रहते हैं और बाप उन बच्चों को देख सूक्ष्म में उन्हों के ऊपर दिल का प्यार अवश्य होता है जो उन्हों को भी महसूस होता है कि बाबा का प्यार मेरे से है। ऐसे दिलखुश बच्चे बहुत हैं और सदा ही खुश रहेंगे। जो नहीं भी है वह भी सदा खुश रहना।

यू.पी. पश्चिम नेपाल और बनारस के 10 हजार भाई बहिनें आये हैं:- अच्छा है। अच्छा किया है और अच्छा कर भी रहे हैं। आप इतनी सेवा से सैटिस्फाय हो ना। मुबारक हो।

(डबल विदेशी सेन्टर वासी) अच्छा है। विदेश ने भी उन्नति अच्छी की है। बापदादा खुश है।

भारतवासी सभी टीचर्स:- भारतवासी कम नहीं है। अच्छा है जो भी जो कार्य कर रहे हैं वह अच्छा है।

सभी बच्चों को दिल व जान सिक व प्रेम से बापदादा का यादप्यार स्वीकार हो। यह यादप्यार ही सदा रहे तो कोई विघ्न नहीं आयेगा। विघ्न मुक्त हो जायेंगे। बस मेरा बाबा। मेरा वैसे तो कोई भूलता नहीं है। तो मेरा बाबा और बाबा का वर्सा यह याद आने से सदा खुश रहेंगे।

एक-एक से बापदादा दिल से मिल रहा है। ऐसे नहीं पीछे जो बैठे हैं उनसे नहीं मिले। मिल रहे हैं। बापदादा के पास हर बच्चा नजदीक है।

भले कोई यहाँ आये हैं या नहीं आये हैं लेकिन बापदादा चारों ओर के बच्चों को याद दे रहे हैं।

सबके दिल में मीठा बाबा, मीठा प्यारा है। कोई कहते हैं कोई मुख से नहीं भी कहते हैं। लेकिन सबके दिल में है। बापदादा भी कहते हैं वाह बच्चे वाह।

(मोहिनी बहन ने बृजमोहन भाई की याद दी। आज तबियत के कारण वे नहीं पहुंचे हैं) उनको खास याद देना।

विदेश की बड़ी बहिनों से:- निर्विघ्न चल रहा है ना। और आप सब भी प्यार से दिल से सेवा के निमित्त हो। बापदादा खुश है। हर एक अपने शक्ति प्रमाण जो करना चाहिए वह अभी तक तो कर रहे हैं। मुबारक हो। सफलता तो आपका जन्म सिद्ध अधिकार है। अच्छा चल रहा है, अच्छा चलता रहेगा क्योंकि हर एक को बाबा देख रहे हैं मेहनत अच्छी कर रहे हैं। विदेश से जो भी निकले हैं, रत्न अच्छे निकले हैं। भले थोड़े निकले हैं लेकिन अच्छे निकले हैं। सिडनी वालों को यादप्यार देना। सब स्थान ठीक हैं। बापदादा को सबकी याद पहुंचती है। हर एक के दिल में अभी है ही क्या? बस अच्छा है और अच्छे चल भी रहे हैं और चला भी रहे हैं। प्रोग्रेस है।

दीपावली की मुबारक:- बापदादा की तरफ से हर एक बच्चे को चाहे सामने हैं, चाहे सेन्टर पर हैं चाहे देश में हैं चाहे विदेश में हैं, सभी एक-एक को बापदादा दीवाली की मुबारक दे रहे हैं और सदा ऐसे ही बापदादा द्वारा सफलता के सितारे का सर्टीफिकेट लेते रहना। अभी इस समय सफलतामूर्त हो ना। तो सदा सफलतामूर्त सदा एक दो को खुशी की मुबारक देते रहना और लेते रहना। सभी खुश हैं? सभी ने दीपमाला मनाई अर्थात् सदा दीपक समान चमकते रहेंगे। कोई भी बात दीपक की दीपमाला को तंग नहीं करेगी। सदा खुश रहना है और खुशी बांटनी हैं, यह इस दीवाली का स्लोगन सदा याद रहे।

''अपने जगे हुए दिव्य स्वरूप में ऐसा रहो जो आपके सामने आने वालों का दीप जग जाए, आपका साधारण स्वरूप उन्हें दिखाई न दे''

चारों ओर के चैतन्य जगे हुए दीपकों को दीपराज की ओम् शान्ति। यह चैतन्य दीपक कितने प्यारे हैं। आप सबका यादगार विश्व में मना रहे हैं और आप चैतन्य दीपक दीपराज से मिलन मना रहे हैं। हर एक दीपक दीपराज की याद में चमक रहे हैं। बापदादा भी हर दीपक को बहुत बहुत बहुत दिल से यादप्यार दे रहे हैं। हर दीप बहुत स्नेही और दिल में समाने वाले हैं। चारों ओर की रोशनी कितनी दिल को लुभाने वाली है। सबके दिल से क्या निकल रहा है? वाह! वाह! वाह! यह चैतन्य दीपक जिनका यादगार विश्व में मना रहे हैं। वह चैतन्य दीपक दीपराज से मिलन मनाने पहुंच गये हैं। आने वाले सभी दीपकों को देख दीपराज भी कितना दिल से खुश हो रहे हैं। वाह मेरे दीपक वाह! हर एक दीपक की ज्योति नम्बरवार चमक रही है। बापदादा तो वही ज्योति देख सभी दीपों को मुबारक दे रहे हैं। मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। आप लोगों का ही यादगार विश्व में मना रहे हैं। और आप चैतन्य दीपक दीपराज से मिलन मना रहे हो। यह मिलन भी बहुत प्यारा और न्यारा है। हर दीपक के दिल में कौन समाया हुआ है? दीपराज मेरा बाबा। हर एक के सूरत में दीपराज की याद समाई हुई देख रहे हैं।

आज के दिन आप भी विश्व में अपना यादगार देख रहे हो ना। कितने भक्त चारों ओर आप दीपकों को याद कर रहे हैं और चैतन्य दीप रूप में आप दीपराज से मिलन मना रहे हो। यह मिलन का दिन दीवाली के रूप में मना रहे हैं। आप सबको भी अपना यादगार देख खुशी होती है दिल में कि वाह दीपराज वाह! हर साल का यादगार बना दिया है। आप समझ सकते हैं कि यह दीप की ज्वाला क्या है! रोशनी क्या है! भक्त तो कोई न कोई रोशनी जगा देता है। लेकिन आप सच्चे दीपक जानते हो कि दीपराज और दीपकों का मिलन हो रहा है। बापदादा भी एक-एक दीपक को देख आगे से पीछे वालों को दूर से देख खुश हो रहे हैं, वाह दीपराज के दीपक वाह! अपना ही यादगार देख रहे हो और चैतन्य रूप में आप दीपराज से मिलन मना रहे हो। एक-एक दीपक की अपनी-अपनी रोशनी कितनी प्यारी लगती है। अगर स्थूल में भी 10-12 दीपक इकट्ठे करो तो उनकी ज्योति कितनी अच्छी लगती है और बापदादा खुश है कि बापदादा को इतने चैतन्य दीपक सम्मुख देखने को मिल रहा है और बापदादा हर एक दीपक को यही कह रहे हैं वाह दीपक वाह! तो बापदादा ही चैतन्य में दीपकों को देख सकते हैं वा बाप के बच्चे ही एक-दो को देख रहे हैं। आप सभी किस रूप में बैठे हो! चैतन्य दीपक के रूप में हो ना! हर एक की ज्योति अगर दृश्य देखो तो बड़ी रीयल और सुन्दर दिखाई देती है। सारा फेस ही दीपक के मुआफिक जगमगा रहे हैं। आप भी अपने को उसी रूप में जान रहे हो और अपने को साक्षी होकर देख कितने मुस्करा रहे हो। बापदादा भी हर मुस्कराते हुए दीपक को देख चैतन्य दीपकों की दीवाली मना रहे हैं। हर एक दीपक अपनी दिव्य ज्योति फैला रहे हैं। अगर इतने दीपक स्थूल में जग जाएं तो कितना सुन्दर नज़ारा हो जाए लेकिन बापदादा चैतन्य सच्चे दीपकों की माला को देख रहे हैं। हर एक दीपक अपने अपने प्रैक्टिकल धारणा के स्वरूप में बापदादा देख रहे हैं और खुश हो रहे हैं वाह मेरे जगे हुए दीपक वाह!

बापदादा आप चैतन्य दीपकों को देख कितने खुश हो रहे हैं। वाह दीप वाह! आप सबको भी अपना स्वरूप दीपक की रोशनी स्वरूप दिखाई दे रहा है ना। बापदादा को तो बहुत अच्छा जगते हुए दीपक नम्बरवार तो हैं लेकिन जगे हुए दीपकों की सभा देख कितनी खुशी हो रही है। वाह जगे हुए दीपक वाह! सदा जागती ज्योत, भक्त कितना प्यार से याद करते हैं और बापदादा अपने सामने दीपकों को देख खुश हो रहे है वाह दीप वाह! आप सबने मिलकर विश्व के अन्दर दीप जगाये हैं और जगाते रहेंगे। तो बापदादा क्या देखते हैं! चैतन्य दीपकों को देख बहुत खुश हो रहे हैं वाह बच्चे वाह! वाह दीपक वाह!

अभी आगे भी अपनी ज्योति से, दीपक की ज्योति से औरों को दीप बनाके जगाते चलो। विश्व में चैतन्य दीपकों को नहीं जानते हैं तो स्थूल दीपक जगाते हैं। लेकिन आप सभी आज किसको देख रहे हो? जगे हुए दीपकों को, चैतन्य सूरत में देख रहे हो। बापदादा भी चैतन्य रूप में एक-एक बच्चे को दीपक के रूप में जगते हुए देख खुश हो रहे हैं। रोशनी में फर्क तो है, नम्बरवार हैं लेकिन बुझे हुए से जग तो गये ना। तो बापदादा जगे हुए दीपकों की सभा देख रहे हैं। वह तो सिर्फ दीपमाला जगाते हैं लेकिन बापदादा जगे हुए दीपकों की सभा देख रहे हैं, संगठन देख रहे हैं। बताओ कितना प्यारा है। एक-एक चैतन्य दीपक अपनी ज्योति को जान सकते हैं। बापदादा स्वरूप में देख रहे हैं और बच्चे बुद्धि द्वारा जान सकते हैं। तो आप सभी ने इस सभा में दीवाली, सच्चे दीपकों की दीवाली, जगे हुए दीपकों की दीवाली देख रहे हो ना। देख रहे हो, हाथ उठाओ। अपने को भी देख रहे हो ना!

बापदादा चैतन्य दीपकों को देख बहुत खुश हो रहे हैं वाह दीपक वाह! एक-एक दीपक अपनी अपनी रोशनी क्या रौनक दिखा रहे हैं। हर एक की सूरत अपनी-अपनी जगी हुई सूरत से अपना परिचय दे रहे हैं। तो आज के दिन दीपराज सच्चे दीप

बच्चों को देख-देख कितने हर्षित हो रहे हैं। वाह दीपक बच्चे वाह! आप लोग भी अभी-अभी जगे हुए रूप से अनेक अपने भक्तों को साक्षात्कार करा रहे हैं। द्वापर से लेके आपके भक्त भी कितने होंगे! चाहे आपके रूप को जानें न जानें लेकिन उन्हों को ड्रामा दिखा रहा है, हमारे दीपक राज़े आ गये हैं। आप यहाँ साधारण रूप में बैठे हो लेकिन आपके भक्त आपको दीप के रूप में देख रहा है और बापदादा वाह बच्चे वाह के स्वरूप में देख रहे हैं। दीपराज और दीपकों का मिलन कितना सुन्दर है। बाप के दिल में वाह बच्चे वाह आ रहा है और बच्चों के दिल में वाह बाबा वाह आ रहा है। तो सभी खुश और आबाद हैं? हैं? हाथ उठाओ। वाह! वाह बच्चे वाह! कोई भी बात आवे, आप जगे हुए दीपक के सामने आवे तो दीप जग जाए। ऐसे दीपराज आप हो, आपके सामने आते ही वह अपने स्वरूप को जान जाए। ऐसा भी समय आयेगा जो आपके सामने आने से आपका दिव्य स्वरूप देखने में आवे, साकार साधारण स्वरूप गायब हो जाए। जैसे बापदादा के सामने आते हो तो बापदादा जैसा समय उस रूप में देखते हो ऐसे ही आप सभी भी ऐसे दिखाई देंगे। साधारण नहीं दिखाई देंगे, साधारण रूप में देवता रूप में या देवी के रूप में दिखाई देंगे। अभी भी कोई-कोई बच्चों से यह प्रैक्टिकल भासना आती है लेकिन सभी ऐसी स्टेज में पहुंच ही जायेंगे।

बापदादा आज आप सबको चैतन्य दीपक के रूप में ही देख रहे हैं और हर एक के प्रति वाह वाह निकल रहा है। सभी खुश हैं! खुश है? हाथ उठाओ। वाह! खुशी तो आपकी अपनी चीज़ है, खुशी कोई और चीज़ नहीं, अपनी चीज़ है वह अपने में लाओ बस और क्या करना है! अच्छा।

सेवा का टर्न कर्नाटक और इन्दौर ज़ोन का है:-(कर्नाटक के 10,000 आये हैं) बहुत अच्छा। बढ़ते चलो, बढ़ाते चलो। अच्छा यज्ञ सेवा का चांस लिया और सबको सेवा से अपना परिचय दिया। बापदादा भी कर्नाटक निवासियों को खास यादप्यार दे रहे हैं।

इन्दौर ज़ोन (3000आये हैं):- बहुत अच्छा। अच्छा है हर एक को चांस मिलता है और सब खुशी-खुशी से चांस को प्रैक्टिकल में लाते हैं। तो देखो कितने आये हुए हैं। सेवा का भाग्य बहुत अच्छा मिला हुआ है। ब्राह्मण ब्राह्मणों की सेवा करते हैं। यह भाग्य कितना प्यारा है और खुश कितने होते हैं। आप सबको खुशी हो रही है ना कि हमको चांस मिला है। अच्छा है।

डबल विदेशी भाई बहिनें:- अच्छे आये हैं। डबल विदेशी कोई चांस में चांस नहीं लेवे, ऐसा नहीं होता। चाहे थोड़े चाहे बहुत हाजिरी सब तरफ की होती है। अच्छा है, डबल विदेशियों को डबल बार क्या हजार डबल बार बधाई। और यहाँ के ज़ोन को जो सेवा में निमित्त बने हैं उन्हों को कितने बार हजार बार मुबारक हो, मुबारक हो। हर एक के दिल से सेवा के लिए मुबारक निकल रही है, यह बापदादा दिल को देख रहे हैं। डबल विदेशी बच्चों को भी खड़े हुए हैं, अच्छा लग रहा है। डबल विदेशी किसी भी पार्ट में पार्ट जरूर लेते हैं, यह बापदादा को अच्छा लगता है। कमाल है, कहाँ से भी पहुंच जाते हैं। तो डबल विदेशियों को डबल मुबारक हो और यहाँ के सेवाधारियों को हजार बार मुबारक है, मुबारक है।

पहली बार बहुत आये हैं:- अच्छा है, बापदादा देख रहा है, अच्छा है। बापदादा इस साधू को भी देख रहा है। (कर्नाटक से एक महात्मा जी आये हैं, उन्हें बापदादा देख रहे हैं) अच्छा है अपने हमजिन्स को जगाना। ऐसे ग्रुप लेके आओ तो अच्छा सभी समझेंगे कि इन्हों की सेवा भी कम नहीं रह जाए। फिर भी काम तो अच्छा करते हैं ना। आत्माओं को कुछ न कुछ सुनाते हुए कुछ न कुछ अच्छा बनाते ही हैं। काफी चीज़ों से ठीक करते हैं। तो बापदादा इन्हों को भी याद दे रहे हैं। अच्छा।

आज का दिन मनाया। लेकिन सदा आप तो हैं ही प्रैक्टिकल लाइफ में, हर एक के दिल में सदा बाप है और आप भी सदा बाप के दिल में हैं। अच्छा।

दादी जानकी से:- शरीर को चलाना तो आता है ना। ठीक है ना। यही ताकत है। बापदादा समय पर ताकत दे देता है। अच्छा है। सभी बच्चे अपना-अपना काम अच्छा कर रहे हैं इसलिए सभी को मुबारक हो। आप सभी को भी मुबारक है, मुबारक है।

मोहिनी बहन:- ठीक है। बहुत फर्क आ गया है। (आप वरदान देते चलें) हो जायेगा। सेवा करेंगी। अन्दर ही करो। यहाँ तो बहुत आते ही हैं और स्थान पर जाना पड़ता है, यहाँ सब आपेही आते हैं। (यह बाहर सेवा पर जाना चाहती है) ले जाओ तो ठीक उमंग रहेगा।

रमेश भाई से:- अच्छा है, सभी मिलके आपस में सेवा के प्लैन वगैरा बनाते हो वह बापदादा को अच्छा लगता है। कर रहे हो और भी करना। आपस में मीटिंग करते हो सेवा की, थोड़ा और भी बढ़ाते जाओ। अच्छा है। अभी अच्छा चल रहा है।

बृजमोहन भाई से:- सदा ठीक रहेंगे। अच्छा।

''दिलाराम को दिल में बिठाकर मिलन मनाते सदा खुश रहना, अमृतवेला दिन का आरम्भ है इसलिए अमृतवेले का अमृत अवश्य पीना''

आज यह बच्चों का मेला देख बापदादा खुश हो रहे हैं और यही मन कह रहा है वाह बच्चे वाह! यह बाप और बच्चों का मिलन कितना प्यारा है। हर एक बच्चा स्नेह और उमंग से मिलन मना रहे हैं। यह स्नेह सब दु:खों को भूल बाप के स्नेह और सम्बन्ध में वाह बाप और बच्चों का मिलन वाह! बाप बच्चों को देख खुश हो रहे हैं और बच्चे बाप को देख खुश हो रहे हैं। एक-एक बच्चा मुस्करा रहे हैं और बाप भी चाहे नजदीक, चाहे दूर वाले बच्चे को भी देख हर्षित हो रहे हैं। यह बाप और बच्चों का मिलन अलौकिक मिलन है। बाप एक-एक बच्चे को देख खुश हो रहे हैं और बच्चे भी साकार रूप में बाप को देख खुश हो रहे हैं। यह अलौकिक मिलन कितना न्यारा और प्यारा है। हर एक के मैजॉरिटी चेहरे मुस्करा रहे हैं और बापदादा एक-एक बच्चे को चारों ओर देख मन में गीत गा रहे हैं वाह मीठे बच्चे वाह! बच्चों के दिल का गीत भी सुनाई दे रहा है। यह बाप और बच्चों का मिलन न्यारा और प्यारा है। हर एक के दिल में मिलन की खुशी इस सूरत से दिखाई दे रही है। एक-एक बच्चे को देख बापदादा एक-एक बच्चे को वाह बच्चे वाह! कहते हुए मिलन मना रहे हैं। चाहे लास्ट में भी बैठे हैं लेकिन बाप के दूर बैठे भी नजदीक हैं।

आज सीजन का पहला दिन कितना सुहावना है। बच्चों के दिल में भी वाह बाबा वाह है और बाप के दिल में भी हर एक बच्चे के लिए चाहे आगे बैठे हैं चाहे पीछे, लेकिन पीछे वाले भी बाप के सामने हैं। आज के मिलन दिन को याद करते-करते अब सम्मुख मिलन मना रहे हैं। बाप भी हर एक बच्चे के भाग्य को देख क्या गीत गा रहे हैं? एक-एक बच्चा आगे वाले या लास्ट बच्चा बाप के दिल में सम्मुख है। बाप भी बच्चों का मिलन देख बच्चों के गीत गा रहे हैं। सारे विश्व से कितने बच्चों ने अपना दिल का सम्बन्ध, दिल का सम्बन्ध शक्ल से दिखाई दे रहा है और बाप यही गीत गा रहे हैं वाह सिकीलधे बच्चे, लाडले बच्चे वाह! इतना समय भी दिल में मिलते रहते हैं, बाप को भी बच्चों के बिना दिल नहीं लगती और बच्चों को भी सदा दिल में बाप याद रहता ही है। आप सबके दिल में कौन याद है? बाबा कहेंगे ना! और बाबा के दिल में कौन? क्या एक-एक बच्चे को बाबा भूल सकता है! चाहे नम्बरवार हैं लेकिन बच्चा तो है ना!

तो आज दिल में याद करने वालों को सम्मुख देख बापदादा को कितनी खुशी है। एक-एक बच्चे को देख वाह बच्चे वाह! यही दिल कहती है। बच्चे भी कहेंगे हमारे दिल में कौन? बाप भी कहते हमारे दिल में कौन? सभी जानते ही हैं, कहने की जरूरत नहीं। बाप को भी बच्चे भूल नहीं सकते और बच्चों को भी बाप भूल नहीं सकता, दिल में सदा बाप की याद है, हाज़िर है। सूक्ष्म में तो मिलन होता रहता है लेकिन साकार में एक-एक बच्चे को देख चाहे दूर हैं चाहे नजदीक हैं लेकिन बापदादा के दिल में हर बच्चा नम्बरवार याद है। तो आज एक-एक बच्चे को साकार रूप में देख, समीप देख, सम्मुख देख वाह बच्चे वाह का गीत गा रहे हैं। सभी के दिल में कौन रहता, कौन है? कहेंगे मेरा बाबा। और बाप भी क्या कहेंगे? कितने भी कहाँ भी बच्चे हैं लेकिन हर एक दिल में है इसलिए बाप को कहते ही हो दिलाराम। बाप को एक-एक बच्चे को साकार रूप में देखते हुए कितनी खुशी है, वह तो बच्चे भी जानते, बाप भी जानते। सभी दिल से खुश हैं? हाथ उठाओ। दिल में खुश हैं। क्यों? बाप जानते हैं अगर कोई भी बात आती तो भी याद करते हैं और याद करने से इमर्ज हो जाती है। बाप भले कितने भी बच्चे लेकिन बच्चे बाप को नहीं भूलते, बाप बच्चों को नहीं भूलते। यह तो छोटा सा हाल है, उसमें उस अनुसार साकार रूप में बैठे हैं लेकिन आकारी रूप में इमर्ज करो तो कितने बच्चे इमर्ज होते हैं और हर एक किसी न किसी समय याद तो करते हैं। बापदादा के पास आकारी रूप में इमर्ज होते हैं। बच्चे भी अनुभव करते, बाप भी अनुभव करते हैं क्योंकि बच्चे बाप से मिलन के बिना अकेले हो जाते हैं और बाप भी बच्चों से मिलन के बिना अकेले हो जाते हैं। सूक्ष्म में इमर्ज सभी को कर सकते हैं लेकिन साकार और सूक्ष्म रूप में मिलन में फर्क है। आप भी अनुभव करते हो ना! तो आज सीजन का पहला दिन है, बाईचांस कोई न कोई प्रोग्राम होता रहता है इस कारण आज भी जितने बच्चे आये हैं उतनों से साकार मिलन मना रहे हैं। तो सभी बच्चे सदा खुश रहते हैं या कभी-कभी? जो सदा खुश रहते हैं, कोई भी बात हो जाए, क्योंकि कलियुग है लेकिन यह बाप और बच्चों का सम्बन्ध ऐसा है जो बच्चा कहे बाबा, बाबा कहे बच्चे मिलन होता ही रहता है, होता है ना! हाथ उठाओ, होता है? यहाँ भी दिखाई दे रहा है। देखो बाप के पार्ट के साथ यह साधन भी निकले हुए हैं। दूर बैठे भी लास्ट वाला नजदीक दिखाई दे रहा है।

संगम के समय जब बाप आते हैं तो साइंस भी अपना अच्छा मददगार है। वहाँ बैठे भी मुरली सुनने चाहो तो सुन सकते हो ना। साधन चाहिए। जैसे आप बाप को याद करने के बिना नहीं रह सकते वैसे बाप भी बच्चों को याद करने बिना नहीं

रह सकते हैं। बाप भी इमर्ज करके मिलते हैं, रह नहीं सकते हैं। तो आज के दिन साकार रूप में मिलन का दिन है। बाप बच्चों को देख रहे हैं और बच्चे बाप को देख रहे हैं। सभी सदा खुश रहते हैं? कोई कभी-कभी खुश रहते हैं और कोई सदा खुश रहते हैं, तो सदा खुश रहने वाले बाप के आंखों के सामने घूमते रहते हैं क्योंकि बाप भी बच्चों के बिना रह नहीं सकते हैं और बच्चों को कभी भी कोई बात हो जाती है तो वह भी भूलता नहीं है, बाप के पास पहुंचता है। यह नाता ही ऐसा है जो भूल नहीं सकता। बाप कहते हैं मेरे लाडले बच्चे और बच्चे कहते मेरा बाबा, एक दिन भी भूल सकता है! भूल सकते हैं? भूल सकते नहीं क्योंकि बाप और बच्चों का ऐसा दिल का नाता है जो दिल में रहता ही है। बाप भी रह नहीं सकता, बच्चे भी रह नही सकते। जैसे आज स्थूल में सम्मुख मिलन हो रहा है ऐसे बाप बच्चों को इमर्ज करते मिलते रहते हैं, बच्चे भी तो मिलते रहते हैं ना।

तो सभी आज से प्रोग्रेस क्या करेंगे? क्योंकि हर समय आगे बढ़ना है। तो आगे क्या बढ़ेंगे? आगे बढ़ना अर्थात् दिल में बापदादा को समाना। दिल की बात कभी भी भूल नहीं सकती और दिल में सदा याद रह सकती है। रहती है ना! दिल में रह सकती है, सम्मुख की बात अलग है लेकिन दिल में जब भी चाहो तब बाप से मिल सकते हो और बाप भी मिलन मनाते रहते हैं, बाप को भी चैन नहीं आता बच्चों के बिना। तो सदा बाप और बच्चों का इस संगमयुग में मिलन मनाने का पार्ट बना हुआ है, जो जितना याद करे उतना इमर्ज कर सकते हैं। तो बापदादा भी खुश होते हैं जब सम्मुख मिलन का प्रोग्राम बनाते हैं तो बापदादा भी खुश होते हैं। बच्चे तो खुश होते ही हैं लेकिन बापदादा भी खुश होते हैं। तो सभी सदा खुश रहें, खुश रहे कि बीच-बीच में कोई खुशी के बजाए और कुछ स्थिति रही? जो सदा खुश रहे कोई भी माया के किसी भी रूप से सेफ रहे क्योंकि भिन्न-भिन्न रूप से माया आती है। सिर्फ खुशी के रूप से नहीं, विचारों के रूप से भी माया अपना बनाती है तो अभी इस मिलन के बाद मन में बाप को बिठाते रहना। दिलाराम को दिल ही पसन्द है। दिल में याद किया तो सब तरह से याद आ ही जाती है। कम से कम हर एक अमृतवेला तो मनाते हो ना! जो अमृतवेला रोज़ जरूर मनाते हैं वह हाथ उठाओ। मैजॉरिटी हैं। हर जगह अमृतवेले का साधन तो अपनाते हैं, कोशिश अच्छी कर रहे हो, अमृतवेले को महत्व देते हो लेकिन आगे भी जो अमृतवेले में कभी-कभी हो, वह आगे बढ़ना क्योंकि अमृतवेला दिन का आरम्भ है, तो उसमें जरूर याद में रहना है। सारे दिन का प्रभाव पड़ता है। सभी खुश हैं कि बीच में माया भी चांस लेती है? खुशी नहीं गंवाना। माया आवे भी तो फौरन बाप को सुनाके चेंज हो जाना। अगर बाप को नहीं पहुंच सको तो अपने निमित्त बड़ों को जरूर सुनाओ। एक दिन से बढ़ाना नहीं, नहीं तो आदत पड़ जायेगी। यह अमृतवेले का अमृत पीना आवश्यक है, तो अवश्य इस समय को सफल करते रहना। अच्छा।

सभी खुश हैं और खुश रहेंगे, पक्का! कोई भी छोटी मोटी बात आवे लेकिन खुशी नहीं जाये। जब भी अचानक कोई देखे तो सदा खुशनुमा दिखाई दे।

सेवा का टर्न पंजाब और राजस्थान ज़ोन का है:- (पंजाब से 10 हजार और राजस्थान से 5000 आये हैं) हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। (दोनों ग्रुप को अलग-अलग उठाया, दोनों ज़ोन ने मिलकर अच्छी सेवा की है)।

अच्छा है। सेवाधारी बहुत हैं। अभी उठके खड़े हुए हैं तो आधा-आधा तो होगा, अच्छा है। दोनों ज़ोन को मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा है। क्यों? यज्ञ सेवा का चांस मिलता है। वैसे तो खास समय निकाल के नहीं आयेंगे। सेवा भल हो। लेकिन यह चांस है यज्ञ सेवा करने का। तो इसमें बहुत चांस ले सकते हो और सब सबजेक्ट में चांस लेना चाहिए। आलराउण्ड होना चाहिए। अच्छा है।

डबल विदेशी 300 आये हैं:- विदेशी तो यहाँ बहुत हैं, विदेशियों का टर्न है क्या! (हर टर्न में विदेशी आते हैं) अच्छा है। सिस्टम ठीक बनाई है। हर एक को चांस मिलता है। अच्छा।

बापदादा देखते हैं कि हर एक बच्चा अपने समय (सेवा का समय) फिक्स होने पर अच्छा साथ दे रहे हैं। तो सभी बच्चों को समय पर साथ देने की बापदादा हजार बार यादप्यार दे रहे हैं।

(दादियां बापदादा से मिलन मना रही हैं)

मोहिनी बहन ने न्युयार्क से यादप्यार भेजी है:- मोहिनी को खास यादप्यार भेजना।

मोहिनी बहन:- तबियत अच्छी है, मुक्ति हो गई? अच्छा।

''नये वर्ष में तीव्र पुरुषार्थ का अटेन्शन रख सदा आगे बढ़ते रहना, चेकिंग कर स्वयं का परिवर्तन करना, फाइनल पेपर अचानक होना है इसलिए हर सबजेक्ट में पास मार्क्स लेना, सदा साथ रहना और साथ राज्य में आना''

नये वर्ष की नवीनता सम्पन्न मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। बापदादा अपने तीव्र पुरुषार्थी बच्चों को देख सभी बच्चों को नये वर्ष की नवीनता की मुबारक दे रहे हैं। इस नये वर्ष के आरम्भ में हर बच्चे ने मन्सा-वाचा-सम्बन्ध-सम्पर्क में अपने में अवश्य कोई नवीनता का लक्ष्य रखकर प्रैक्टिकल में वर्ष की नवीनता बुद्धि में रखी होगी। पुरुषार्थ में कदम को, विशेषता को अपनी बुद्धि में लाया होगा। सभी चल रहे हैं, यह तो पुरुषार्थी का अर्थ ही है आगे कदम को बढ़ाना। तो बापदादा देख रहे थे कि हर एक ने अपने पुरुषार्थ को आगे से आगे बढ़ाने में श्रेष्ठ संकल्प किया होगा! जिन्होंने आगे बढ़ने का संकल्प अपने प्रति किया, वह हाथ उठाना। पीछे वाले भी हाथ उठायें, अगर किया है तो! संगमयुग है ही कदम को आगे बढ़ाने का युग। तो अपने लिए अवश्य आगे बढ़ने का साधन वा विधि बनाई होगी। अपने प्रति सहज और श्रेष्ठ साधन अवश्य लक्ष्य के रूप में इमर्ज रखा होगा! जिन्होंने आगे के लिए कोई न कोई मन्सा-वाचा-कर्मणा और सम्बन्ध सम्पर्क में कदम को आगे बढ़ाने का लक्ष्य रखा होगा, वह हाथ उठाओ। अच्छा है। हाथ तो बहुत अच्छा उठाया है। पीछे वाले भी हाथ उठा रहे हैं। थोड़ा ऊंचा हाथ उठाओ, ऐसे ऊंचा। अच्छा हाथ उठा रहे हैं। बापदादा भी पुरुषार्थ के हाथ को देख खुश है और लक्ष्य और लक्षण साथ रहेगा। ऐसा प्लैन अपने लिए अवश्य बनाया होगा, बनाया है भी। बापदादा ने देखा कि कई बच्चों ने अपने लिए प्लैन बनाया है और बापदादा खुश है कि प्लैन और प्रैक्टिकल, जैसा लक्ष्य रखा है उस लक्ष्य को अवश्य पूर्ण करेंगे। करेंगे ना! इसमें हाथ उठाओ, अच्छा करेंगे! क्योंकि बापदादा खुद भी हर एक बच्चे का पोतामेल समय प्रमाण देखते हैं और आगे से आगे बढ़ने का वरदान भी साथ में देते हैं। बापदादा ने देखा लक्ष्य बहुतों का अच्छा है लेकिन चलते-चलते कोई सरकमस्टांश लक्ष्य को थोड़ा सा ढीला कर देता है। लक्ष्य अच्छा रखा है और बापदादा भी लक्ष्य को देख खुश होते हैं लेकिन साथ में आगे बढ़ने में थोड़ा बहुत फर्क दिखाई देता है। फिर भी बापदादा ने देखा लक्ष्य मैजारिटी का अच्छा है। अब लक्ष्य और लक्षण दोनों ही साथ-साथ बढ़ता रहे, यह अटेन्शन रखना, इसकी आवश्यकता है। सोचा और किया, दोनों ही साथ-साथ हो यह जरूरी है। चाहे कुछ भी बातें तो होती ही हैं, यही छोटे-छोटे पेपर हैं लेकिन इसमें आगे बढ़ना, इस बात में अटेन्शन थोड़ा ज्यादा चाहिए क्योंकि बापदादा के पास हर एक बच्चे का रिकार्ड रहता है। जैसे आप अपना रिकार्ड रखते हो, ऐसे बापदादा भी हर बच्चे का बीच-बीच में रिकार्ड देखते हैं। लक्ष्य बहुत अच्छा है, जिस समय प्लैन बनाते हैं, बहुत उमंग-उत्साह से बनाते हैं लेकिन बाद में अटेन्शन देना पड़ेगा क्योंकि आप सबको मालूम है कि लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए थोड़ा सा अटेन्शन सब देते हैं लेकिन नम्बर हैं। तो स्वयं को किस नम्बर में समझते हैं, बाप ने देखा समझ बहुत अच्छी है, समझ के साथ अपनी चेकिंग भी अच्छी करते हैं लेकिन चलते-चलते कोई बातें ऐसी आती हैं जो तीव्र पुरुषार्थ को साधारण पुरुषार्थ में बदल लेती हैं। और बापदादा एक-एक को देख यही कहते कि अटेन्शन अविनाशी रहे, बातें आती हैं लेकिन बातों में अटेन्शन कम नहीं हो। वैसे बापदादा ने देखा है कि कई बच्चे लक्ष्य अपना अच्छा रखते हैं और चलते भी हैं लेकिन..., लेकिन आता है। समय अब आप सबका इन्तजार कर रहे हैं। लक्ष्य अच्छा है, चेकिंग भी अच्छा है लेकिन बीच-बीच में कोई-कोई बात अपने तरफ आकर्षण कर देती है और फाइनल रिजल्ट अचानक होनी है, कोई तारीख फिक्स नहीं होगी।

बापदादा हर एक बच्चे को नम्बरवन, पुरुषार्थ की विधि से हर बच्चे को देखने चाहते हैं और बापदादा ने देखा है कि हर एक बच्चा भी चाहते यही हैं, सिर्फ कहाँ कहाँ संग का रंग भी लग जाता है, अलबेलेपन का। हो जायेंगे, दोनों ही अनुभव तो किया है। तो समझते हैं समय पर सोचा तो है, क्या है उस पर अटेन्शन दे देंगे। लेकिन यहाँ अटेन्शन का नोट तो होता है लेकिन बहुतकाल या बहुतकाल में बीच-बीच में बहुतकाल से रिवाजी चाल हो जाती है, वह रिजल्ट ज्यादा है। साधारणता की जो नेचर नहीं होनी

चाहिए, वह कभी कैसे, कभी कैसे हो जाती है। तो बापदादा चाहते हैं कि सदा ही अपने ऊपर नज़र हो, साधारणता नहीं हो। अभी तो आप सभी पुरानों की लिस्ट वाले हो, थोड़े नये-नये हैं, मैजारिटी पुराने की लिस्ट में हैं। और फाइनल पेपर अचानक होना है, डेट फिक्स नहीं होनी है। तो कोई भी अपनी विशेषता को सदाकाल का बनाना यह आवश्यकता है क्योंकि पेपर सदा नहीं आता है, बीच-बीच में पेपर ड्रामानुसार होते हैं इसलिए सदा अटेन्शन चाहिए। बहुत अटेन्शन देते भी हैं, उनको तो बापदादा तीव्र पुरुषार्थियों की लिस्ट में रखते हैं, अटेन्शन देते हैं लेकिन कुछ समय तीव्र, कुछ समय बीच में फिर पेपर आते हैं, उसमें थोड़ा-थोड़ा फर्क पड़ जाता है।

तो बापदादा सभी बच्चों को देख खुश तो होते हैं कि दिनप्रतिदिन देखा गया कि अपने ऊपर अटेन्शन देते जरूर हैं, इतना अपने ऊपर अटेन्शन छोड़ दें, ऐसे नहीं हैं, है लेकिन नम्बर हैं और बापदादा बीच-बीच में संगठित रूप में मिलने में खास अटेन्शन देते हैं। लेकिन हर एक से पुरुषार्थ की गति को देखने में भी अन्तर है, इसमें थोड़ा सा अलबेलापन देखने में आ जाता है। हो जायेगा, हो जायेगा... यह थोड़ा एडीशन हो जाता है और बापदादा चाहता है, कोटों में कोई बच्चे तो हैं, तो कोटों में कोई इन्हों का तो अटेन्शन होना ही चाहिए। और बापदादा जानते हैं कि फाइनल पेपर अचानक होना है, सरकमस्टांश भी ऐसे ही होंगे इसलिए अपनी चेकिंग को भी चेक करो कि जैसे बापदादा चाहता है, वर्णन भी करता है, उसी प्रमाण मेरी भी चेकिंग है? सुनते तो रहते ही हो, तो बापदादा क्या चाहते हैं? कम से कम रात को सोने के पहले हर दिन की चेकिंग आवश्यक है क्योंकि कामकाज में थक जाते हैं ना, तो टाइम देते हैं, दिल में आता है लेकिन थकावट अपने तरफ खींच लेती है। तो बापदादा समय को देखकर फिर भी अटेन्शन दिलाते रहते हैं। अटेन्शन देने में कभी भी अलबेले नहीं बनना।

बापदादा देखते हैं पुरुषार्थ बहुत तरीके से करते हैं, अटेन्शन भी देते हैं एकदम ऐसे अलबेले भी नहीं हैं लेकिन समय अचानक आना है, कोई भी समय आना है इसलिए बापदादा भी जनरल में यही सोचते हैं हर बच्चे को कहते हैं, अटेन्शन प्लीज़। हर सबजेक्ट में कम से कम पास मार्क्स तो होने चाहिए। नम्बर थोड़ा सा पीछे है वह बात अलग है लेकिन अटेन्शन है, परिवर्तन भी है, यह चेक करो। अलबेलापन तो नहीं आता? हो जायेंगे, हो जायेंगे.. यह क्या बड़ी बात है, इसको कहते हैं अटेन्शन में अलबेलापन। तो बापदादा हर बच्चे के पुरुषार्थ में मैजारिटी खुश भी है लेकिन बीच-बीच में माया भी अपना चांस ले लेती है। तो बापदादा मुबारक भी देते हैं लेकिन साथ में अटेन्शन, अटेन्शन का अर्थ है नो टेन्शन। किसी भी प्रकार का, चाहे किसी भी सबजेक्ट में अटेन्शन पूरा हो। ऐसे नहीं सोचे यह तो थोड़ा बहुत चल जायेगा, कभी एक नम्बर की कमी से भी बहुत नुकसान हो जाता है इसलिए बापदादा एक बच्चे को भी साधारण पुरुषार्थ में भी देखना नहीं चाहते हैं। यह संगठन तो बीच-बीच में होता है यह अच्छा है, संगठन को देखके बापदादा से मिलने से उमंग में आ जाते हैं लेकिन यह उमंग आगे भी चलता रहे, उसमें थोड़ा छोटी-मोटी बातें पुरुषार्थ खत्म नहीं करती, थोड़ा सा ढीला करती हैं। तो बापदादा खुश होते हैं कि फिर भी बीच में कोई न कोई प्रोग्राम ज्यादा से ज्यादा मिलने का रखते हैं, सम्मुख मिलने से उमंग और उत्साह बढ़ता है, यह तो बापदादा भी देख रहे हैं। तो सभी अपने आपको जिम्मेवार समझ चेक करें, अपने आप सावधान रहें।

सभी ठीक हैं, हाथ उठाओ। हाथ उठाते हैं बापदादा इस पर तो खुश हो जाते हैं लेकिन बच्चे भी चतुर हैं ना। कहेंगे उस समय तो हम ठीक थे ना इसलिए हाथ उठाया और है भी राइट। लेकिन आप सभी तो औरों को भी आगे बढ़ाने वाले हैं, ठीक चल रहे हैं वह तो ठीक है, बाप भी मानते हैं लेकिन यह सर्टीफिकेट सदा रहे अर्थात् इतना अटेन्शन अपने ऊपर सदा रहे, तो क्या होगा, बापदादा भी खुश है और स्वयं पुरुषार्थ करने वाले भी ठीक। और उन्हों के साथी भी ठीक। तो अच्छा पुरुषार्थी हैं। तो बापदादा भी खुश है जब हाथ उठाते हैं तो बापदादा समझते हैं कोई कहेंगे हाथ उठा लिया लेकिन हाथ उठाया उनको आगे के लिए तो शक्ति मिलेगी ना। अपने आप तो सोचेंगे ना। मानो कल ही किसके ऊपर पेपर आ जाता है तो सोच तो चलेगा किसमें हाथ उठाया। और करेक्शन करके आगे बढ़ा। बापदादा यही चाहते हैं हर बच्चा जैसे अभी यहाँ साथ बैठे हैं खुशी-खुशी से, ऐसे ही फाइनल में भी ऐसे हो। हर बात में पास, पास, पास। सोचेंगे, देखेंगे नहीं पास हैं ही। तो क्या समझते हो पास होंगे ही या थोड़ा-थोड़ा होगा! जो समझते हैं अभी पास होकर ही दिखायेंगे वह हाथ उठाओ। देखो, हां, हाथ उठाने में तो बापदादा खुश होते है। अच्छा लगता

है, उमंग है लेकिन बहुत ही छोटी-छोटी बातें रूकावट डाल देती हैं। अभी इसको मिटाने की कोशिश करो। सोचते भी हो, आगे से नहीं होगा लेकिन फिर भी हो जाता हैं अभी तक की रिजल्ट में जो सोचते हैं कि अभी से परिवर्तन होना है, अपने को परिवर्तित करना है वह हाथ उठाओ। हाथ इतना अच्छा उठाते हैं जो बापदादा खुश हो जाता है। अच्छा है। तो बापदादा साथ है तो हाथ भी साथ देता है। लेकिन बापदादा को तो साथ सदा रखना है ना। यह तो हुआ दो घण्टे का साथ। सदा ऐसे ही साथ का अनुभव रखो, बस। अपने को अकेले नहीं करो। बापदादा को सदा साथ रखो।

तो अभी सभी जब फिर बापदादा मिले तब तक तो ऐसा ही हाथ रहेगा। इसमें दो दो हाथ उठाओ। तो अभी हमेशा रात्रि को बापदादा को सामने रख, इमर्ज कर अपनी रिजल्ट उठाके बापदादा को खुश कर देना। कोई गलती नहीं हुई। न मन्सा, न वाचा, न कर्मणा। हो सकता है? इसमें हाथ उठाओ। अच्छा। हाथ तो उठाया, इसमें तो बापदादा खुश हुआ लेकिन जब भी कुछ हो जाता है तो अपने जो साथी हैं, जो पुरुषार्थी हैं उनको बताके और आगे के लिए प्रामिस करो, भले किसी के आगे प्रामिस नहीं करो,अपने आप से तो कर सकते हो। बाप को सामने रख प्रामिस करो क्योंकि रिजल्ट में तो समय भी गिनते हैं ना। कितना समय रहे। अच्छा उस समय तो ठीक है, वह भी अच्छा है लेकिन फाइनल रिजल्ट में समय भी चेक होगा ना इसलिए अभी अपने आपसे रोज़ रात को यह सभा और अपना हाथ इमर्ज करना, मैंने बाप के आगे क्या हाथ उठाया, कि परिवर्तन करेंगे या सोचेंगे? तो हिम्मत है इतनी? आज के बाद जो सोचा है सम्पूर्ण बनने का, वह अविनाशी होगा। हो सकता है? बीती सो बीती। आज अपने दिल से सभा के बीच अपने को देखते हुए सभी देख रहे हैं, यह नहीं सोचो, बाप के सामने प्रामिस कर रहा हूँ, तो बाप ने देखा अर्थात् सभी ने देखा। हो सकता है यह? तो जिसमें हिम्मत है, आगे से जो बीच-बीच में थोड़ा सा किसी भी कारण से, कारण तो बनता ही है लेकिन किसी भी कारण से अपने सम्पूर्णता की सीट नहीं छोड़ेगा, वह हाथ उठाओ। अच्छा, मुबारक हो। अभी जिसने नहीं उठाया, उसको तो शर्म आयेगा इसीलिए वह हाथ नहीं उठाओ लेकिन उमंग-उत्साह है, हाथ उठाके करके दिखायेंगे वह हाथ उठाओ। हाथ उठाते इसीलिए है, वैसे तो बाप जानते हैं क्या रिजल्ट होती है लेकिन उठाने से आपको यह हाथ उठाना भी मदद करेगा। इतने संगठन के बीच में हाथ उठाया, यह कोई कम बात है क्या! इसलिए अभी यह सोचो कि परिवर्तन का अर्थ क्या होता है? अच्छा अभी साहस किया तो सही ना। तो ऐसी प्रामिस करके फिर भी नहीं करने का, तो लाइन में तो आ जायेंगे ना। तो जब भी कोई ऐसे हो उस समय सभा के बीच में हाथ उठाया ना, याद करो। अपने आपको ही फायदा है और बाप तो खुश होगा लेकिन करना तो आपको पड़ेगा ना। तो जब भी कोई परिस्थिति आवे अपना हाथ याद करना। मदद मिलेगी। ऐसे ही याद करने से नहीं। इतने सारे भाई बहनों के बीच में आपने अपने दिल से प्रामिस किया तो वह मदद मिलेगी। क्योंकि बापदादा चाहते हैं कि जो भी बच्चा यहाँ हाजिर है अभी, हिम्मत तो रखते हैं ना। चाहते तो हैं ना बनना, नहीं तो हाथ क्यों उठाओ। नहीं उठाओ, कौन देखता है लेकिन सोचते हैं, हिम्मत रखते हैं लेकिन उस हिम्मत को पानी देते रहो। बस प्रामिस किया और छूट जाते हैं। यह हाथ हमेशा याद रखो कितनी सभा है। बाप तो है ही। बाप के आगे तो क्या इतने ब्राह्मणों के आगे संकल्प किया उसको हल्का नहीं करना। चाहते हो तभी तो हाथ उठाते हैं ना। तो जो चाहना है, कहा है हाथ उठाया है नहीं। मन की मेरी चाहना है इसीलिए हाथ उठाया, तो उसको आगे बढ़ाते रहो। बात को न देख करके बढ़ने की बात को सोचो। हो जायेंगे। और कौन बनेंगे! आप ही तो बनने वाले हो ना! इसलिए अपने में फेथ रखो, जो कहा है वह करके दिखाना है। ठीक है ना! वैसे भी कहा जाता है, अपना कहना याद रखो, जिस समय कुछ होता भी है उस समय इस समय की बात याद रखो क्योंकि अभी भी जो कहते हैं, तो चाहते तो हो ना, तभी तो कहते हो करेंगे। अभी अपने को भी पक्का करते रहो। अमृतवेले यह सीन लाओ मैंने क्या संकल्प उठाया। और बापदादा इतने भाई बहन आपको देखकर खुश हुए, तो इतने लोगों को आपने खुशी दी। हाँ का हाथ उठाया सब खुश हुए ना। तो इतने भाई बहिनों की खुशी को भूलना नहीं। याद तो रख सकते हो ना। रख सकते हो, कि मैंने ऐसे-ऐसे वायुमण्डल में अनुभव किया था? परिवर्तन होना तो है। बिना परिवर्तन के वहाँ भी साथ नहीं रहेंगे, दूर दूर रहेंगे। तो अच्छा लगेगा? अन्त में जब, चलो सतयुग में तो पता ही नहीं पड़ेगा। लेकिन अन्त में रिजल्ट में जब पता पड़ेगा यह कितना नम्बर आया, तो क्या होगा? उस समय भी अच्छा नहीं लगेगा। इसलिए संकल्प दृढ़ करो। सरकमस्टांश आयेंगे, यह तो पता ही है, अनुभवी

हो। करना है, सम्पूर्ण बनना ही है, यह निश्चय रखो। लक्ष्य क्या है? जो इतने सब बैठे हैं, कितने सब ऐसे आ रहे हैं। तो लक्ष्य क्या है? सम्पूर्ण बनने का है ना! तो हर एक को देखो, रात को नोट करो जो लक्ष्य है, हाथ उठाया है, लक्ष्य है ऐसे ही सारे दिन लक्षण चले। चेक करो अपने आपको। दूसरा करे या नहीं करे, अपने आपको चेक करो।

सभी खुश हैं, कितने खुश हो? अच्छा है। खुशी कभी नहीं गंवाना। भले कलियुग अन्त है, तो भी खुश हो ना। तो खुश है और सदा खुश रहेंगे। ठीक बोला। इसमें दो-दो हाथ उठाओ। अच्छा। अभी जब भी कोई बात हो ना, तो मैंने सभा में इतने ब्राह्मणों के बीच में किसमें हाथ उठाया। हाथ तो उठाया ना अभी। इसमें पक्का रहना क्योंकि सतयुग में भी साथ रहना है ना कि अलग हो जायेंगे। साथ रहेंगे ना। राज्य भी करेंगे तो साथ में करेंगे ना। अलग कहाँ हो जायेंगे इसलिए सदा याद रखो आपका साथ आधा कल्प रहेगा। पीछे कुछ भी हो लेकिन आधाकल्प साथ रहेगा। और जो निश्चयबुद्धि हैं वह तो क्या समझते हैं, शुरू से लास्ट तक साथ रहेंगे भिन्न-भिन्न रूप में। बापदादा एक भी बच्चे को अलग नहीं करने चाहते हैं। हर एक बच्चा रोज़ अमृतवेले याद करो, साथ हैं, साथ रहेंगे, साथ राज्य करेंगे। अच्छा है। बापदादा को संगठन अच्छा लगता है। और ऐसे ही सतयुग में भी समान बनेंगे तो वहाँ भी इकट्ठे होते रहेंगे। एक दो में आयेंगे, जायेंगे, मिलेंगे। सभी हैं ना साथी। साथी हैं, हाथ उठाओ। अच्छा है। आपस में साथी साथ रहेंगे, कितना अच्छा है। भले अलग रहेंगे, लेकिन दिल का साथ होगा। ड्रेस चेंज होगी लेकिन मन नहीं चेंज होगा। अच्छा। अभी फिर मिलेंगे।

सेवा का टर्न गुजरात का है, 15 हजार भाई बहिनें गुजरात से आये हैं:- अच्छा है। अभी भी गुजरात ज्यादा है, टर्न है ना। और गुजरात की एक विशेषता है, एक विशेषता यह है कि साथ भी है लेकिन दिल में भी साथ है। कोई भी आर्डर करो तो गुजरात आ जाता है। संख्या ज्यादा है यह भी सेवा का फल है। गुजरात में संख्या अच्छी है। अच्छा है, गुजरात नजदीक भी है, हर बात में साथी बन जाते हैं।

डबल विदेशी-500 भाई बहिनें आये हैं: अच्छा है। जो डबल विदेशी, विदेश से आये हैं, हैं तो देश के लेकिन विदेश से आये हैं, वह उठो। अच्छा।

एक मिनट साइलेन्स। ऐसे लगे जैसे हाल में कोई नहीं।

चारों ओर के बच्चों को बापदादा का विशेष हर एक को यादप्यार स्वीकार हो। हर बच्चे को बापदादा देखकर कितने खुश होते हैं, चाहे कहाँ के भी हो, विदेश के हो, देश के हो लेकिन बाप के बन गये, यह खुशी सभी बच्चों को है।

(न्यूयार्क की मोहिनी बहन की याद दी, घुटनों का आपरेशन हुआ है) - ठीक हो जायेगा, कोई बात नहीं चल पड़ेगी, सबसे आगे। उमंग है। उमंग के कारण ही चलेगी।

दादी जानकी से:- (बाबा दादी को शरीर का बहुत बड़ा पेपर आया है, आप कुछ जादू करो) अरे बाप अलग है ही नहीं। जादू तो कर ही रहा है। सारा यज्ञ साथ है, क्या भी हो लेकिन यज्ञ की मूर्ति हो। आपको देखके सबको उत्साह आता है। निमित्त है।